हिन्दी पाठ-५

मातृभाषा हिन्दी

कक्षा-५

शिक्षा का अधिकार

सर्वशिक्षा अभियान

सब पढ़ें, सब बढ़ें

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ,
ओड़िशा, भुवनेश्वर

ओड़िशा प्राथमिक शिक्षा
कार्यक्रम प्राधिकरण,
भुवनेश्वर

हिन्दी पाठ-५

मातृभाषा हिन्दी

कक्षा-५

पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति

प्रो. डॉ. राधाकान्त मिश्र, अध्यक्ष
डॉ. स्मरप्रिया मिश्र, प्रभारी
डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र
डॉ. स्नेहलता दास
डॉ. लक्ष्मीधर दाश
डॉ. सौदामिनी मिश्र
डॉ. अजित प्रसाद महापात्र
डॉ. नलिनी पाढ़ी
श्रीमती प्रगति दास

संयोजिका:
डॉ. प्रीतिलता जेना
डॉ. तिलोत्तमा सेनापति

प्रकाशक:
विद्यालय और गणशिक्षा विभाग,
ओड़िशा सरकार

संस्करण: २०११ / २०१७

प्रस्तुति:
शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, ओड़िशा, भुवनेश्वर

मुद्रण : पाठ्यपुस्तक उत्पादन और विक्रय, ओड़िशा, भुवनेश्वर

आइए, ऐसा करें :

इस नए पाठ्यक्रम में कई तब्दिलियाँ की गई हैं। पहली है दृष्टिकोण में भिन्नता। अब शिक्षक शिक्षा प्रदान करने की तुलना में विद्यार्थी द्वारा स्वयं सीखने के प्रयास पर जोर दें। भाषण कम करें। विद्यार्थियों को बोलने का मौका दें। उदाहरणार्थ–स्वयं गद्य / पद्य का आदर्श वाचन कर दें, फिर विद्यार्थियों द्वारा उस कार्य को कराएँ। लेखन-शैली बता दें, फिर लिखवाएँ। वाद-विवाद, तर्कसभा, नाटकीय संवाद आदि अधिक करवाएँ। लघु निबंध, छोटे-छोटे अनुच्छेद-लेखन, पत्र, आवेदन पत्र, सरकारी दफ्तरों में प्रचलित पत्रों आदि पर अभ्यास कराया जाए।

दूसरी बात है–भाषा-शिक्षण पर अधिक बल देना है। इसलिए हर पाठ के उपरांत लंबी अनुशीलनियाँ दी गई हैं। उनके आधार पर शिक्षक अपनी तरफ से भी नई प्रश्न-शैलियों का प्रयोग कर सकते हैं और विद्यार्थियों द्वारा अभ्यास करवा सकते हैं। फिर साहित्य पर ध्यान दें । इससे बच्चों की रुचि परिमार्जित होती है और मानवीय - वृत्तियों का पोषण-पल्लवन होता है।

तीसरी बात है- मूल्यांकन-शैली में परिवर्तन। विद्यार्थियों के मस्तिष्क से परीक्षा का भय दूर किया जाए। पाठ को रटने की अपेक्षा सृजनात्मक, व्यक्तिगत लेखन अधिक महत्व रखता है। साल में दो-एक परीक्षा के महत्व को कम करके तात्कालिक / सावधिक परीक्षाएँ अधिक संख्या में हों। सबका मूल्यांकन अंतिम परिणाम में प्रतिफलित हो।

शिक्षकों से अनुरोध है कि वे पाठ्यपुस्तक को पहले देख लें, इसके दृष्टिकोण, कर्म, कार्य-शैली का अनुध्यान करके अपनी शिक्षा-शैली बनाएँ। शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की सक्रियता से भाषा- शिक्षण सरस होता है।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा है। इसे सीखना प्रत्येक नागरिक का संवैधानिक कर्तव्य है। यह सारे देश के जन-जन में योगसूत्र स्थापित करने की भाषा है। इसे सीखने में रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट आदि आधुनिक माध्यमों का भी उपयोग किया जाए। क्योंकि ये शिक्षण के सरल और सशक्त साधन हैं। यह पाठ्यपुस्तक इन सभी का आधार प्रस्तुत करती है।

शिक्षकों, अभिभावकों के सहयोग और साधनों के उपयोग से हिन्दी भाषा का अध्ययन काफी सरस हो सकता है।

विषय सूची

क्र.नं.	विषय		पृष्ठ
१.	धरो मानव का रूप	राधाकांत मिश्र	१
२.	जो देखकर भी नहीं देखते	हेलेन केलर	५
३.	कर्मवीर	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	९
४.	छोटा जादुगर	जयशंकर प्रसाद	१३
५.	तारों की दुनिया में	संकलित	२२
६.	हार नहीं होती	संकलित	३१
७.	महाभारत का एक पृष्ठ	संकलित	३४
८.	छोटी-सी हमारी नदी	रबींद्रनाथ ठाकुर	४०
९.	महामंत्री चाणक्य	अमरनाथ शुक्ल	४४
१०.	कम्प्यूटर : एक अजूबा	संकलित	५१
११.	मेरा बचपन	सुभद्राकुमारी चौहान	५७
१२.	डॉ. राजेंद्र प्रसाद	संकलित	६२
१३.	पत्रलेखन	संकलित	६७
१३.	मनभावन सावन	सुमित्रानंदन पंत	७२
१४.	बड़े भाई साहब	प्रेमचंद	७५
१५.	चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए	संकलित	९२

धरो मानव का रूप

राधाकांत मिश्र

लोग कहते हैं पता नहीं,
तुम कहाँ-कहाँ रहते हो,
मुझे पता है प्रभो ! लेकिन
तुम जहाँ जहाँ बसते हो ।

लोग ढूँढ़ते हैं तुम्हें जाकर
मन्दिर औ' मस्जिदों में ।
पर मैं देखता तुम्हें सदा ही
विद्यालय अस्पतालों में ।

पता नहीं लोग मंदिर जाकर
क्या प्रसाद ले आते हैं ।
हर रोज स्कूल में गुरु मुझे तो
विद्यामृत पिलाते हैं ।

पता नहीं लोग तुमसे क्या-क्या
माँगकर ले आते हैं
घर में जो माँगूँ मुझे सो
माता-पिता देते हैं ।

हो बीमार कभी भागा-भागा
जा पहुँचता अस्पताल,
नर्स डॉक्टर बन बैठे तुम
हो सेवारत बेहाल ।

नहीं जानता कौन तुम्हारे
पराये हैं कौन अपने
निश्छल निर्मल प्यार करते
मुझसे साथी अपने ।

देखता हूँ जब कोई दयालु
करता गरीब को दान,
झलक जाता इन आँखों में
तुम्हारा रूप भगवान !

तुम हो मेरे मातापिता सब
मेरे गुरु और सखा
अधिक नहीं, दे देना उतना
जो मैंने है रखा ।

जहाँ जहाँ जाऊँ देखता
रहूँ तुम्हें सुरभूप,
माँगूँ बस इतना प्रभो तुम
धरो मानव का रूप ।

❖ ❖ ❖

शब्द-अर्थ

पता	-	ठिकाना;
अस्पताल	-	चिकित्सालय;
निश्छल	-	जो छल कपट न जानता हो, सरल प्रकृति का;
निर्मल	-	शुद्ध, पवित्र, स्वच्छ;
दयालु	-	दया करनेवाला,
झलक	-	चमक;
सुर-भूप	-	देवताओं का राजा, भगवान।

अनुशीलनी

१. समझो और लिखो :

(i) लोग भगवान को कहाँ कहाँ ढूँढ़ते हैं ?

(ii) कवि ईश्वर को कहाँ देखते हैं ?

(iii) स्कूल में गुरु हमें क्या पिलाते हैं ?

(iv) घर में हमारी माँग कौन पूरा करता है ?

(v) ईश्वर का रूप कवि की आँखों में कब झलक जाता है ?

(vi) ईश्वर से कवि क्या याचना करते हैं ?

२. पढ़ो और अधूरी पंक्तियों को पूरा करो :

(i) लोग कहते हैं ....

तुम कहाँ कहाँ रहते हो ।

.............पता है प्रभो ! लेकिन

तुम जहाँ .... ।

(ii) घर में जो माँगू..........

माता पिता .... ।

(iii) .... कोई-दयालु

करता ....

.............इन आँखों में

.... भगवान ।

३. प्रस्तुत कविता के ३, ५ और ७ छंदों के भावार्थ लिखो ।

४. नीचे लिखे शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाओ :

विद्यालय :

बीमार :

मंदिर :

दयालु :

५. नीचे लिखे शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखो :

गुरु :

ईश्वर :

माता :

पिता :

स्कूल :

६. याद रखो : भगवान वहाँ मिलते हैं जहाँ मानव में स्नेह, प्रेम, सेवा, दया आदि का भाव होता है ।

❖ ❖ ❖

जो देखकर भी नहीं देखते

हेलेन केलर

कभी-कभी मैं अपने मित्रों की परीक्षा लेती हूँ, यह परखने के लिए कि वे क्या देखते हैं । हाल ही में मेरी एक प्रिय मित्र जंगल की सैर करने के बाद वापिस लौटीं । मैंने उनसे पूछा, ''आपने क्या-क्या देखा ?''

''कुछ खास तो नहीं,'' उनका जवाब था । मुझे बहुत अचरज नहीं हुआ क्योंकि मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हूँ । मेरा विश्वास है कि जिन लोगों की आँखें होती हैं, वे बहुत कम देखते हैं ।

क्या यह संभव है कि भला कोई जंगल में घंटा भर घूमे और फिर भी कोई विशेष चीज न देखे ? मुझे- जिसे कुछ भी दिखाई नहीं देता, भी सैकड़ों रोचक चीजें मिल जाती हैं, जिन्हें मैं छूकर पहचाना लेती हूँ । मैं भोर्ज-पत्र के पेड़ की चिकनी छाल और चीड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से पहचान लेती हूँ ।

वसंत के दौरान मैं टहनियों में नयी कलियाँ खोजती हूँ । मुझे फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी घुमावदार बनावट महसूस करने में अपार आनंद मिलता है । इस दौरान मुझे प्रकृति के जादू का कुछ अहसास होता है । कभी, जब मैं खुशनसीब होती हूँ, तो टहनी पर हाथ रखते ही किसी चिड़िया के मधुर स्वर कानों में गूँजने लगते हैं । अपनी अँगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महसूस कर मैं आनंदित हो उठती हूँ । मुझे चीड़ की फैली पत्तियाँ या घास का मैदान किसी भी महँगे कालीन से अधिक प्रिय हैं । बदलते हुए मौसम का समाँ मेरे जीवन में एक नया रंग और खुशियाँ भर जाता है ।

कभी-कभी मेरा दिल इन सब चीजों को देखने के लिए मचल उठता है । अगर मुझे इन चीजों को सिर्फ छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जाएगा । परंतु, जिन लोगों की आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं । इस दुनिया के अलग-अलग सुंदर रंग उनकी संवेदना को नहीं छूते ।

मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता । वह हमेशा उस चीज की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है ।

यह कितने दु:ख की बात है कि दृष्टि के आशीर्वाद को लोग एक साधारण-सी चीज समझते हैं ।

शब्द-अर्थ

परखना - जाँच करना;
सैर - भ्रमण;
अचरज - आश्चर्य;
आदी - अभ्यस्त;
रोचक - रुचि बढ़ानेवाला;
खुशनसीब - भाग्यवान;
समाँ - वातावरण, माहौल;
मुग्ध - मोहित;
कदर - गुणों की पहचान ।

अनुशीलनी

१. समझो और लिखो :

(I) 'जिन लोगों के पास आँखें हैं वे सचमुच बहुत कम देखते हैं' - हेलेन केलर को ऐसा क्यों लगा ?

(ii) हेलेन को किस काम में अपार आनन्द मिलता है ?

(iii) हेलेन अपने को खुशनसीब कब मानती हैं ?

(iv) हेलेन-केलर प्रकृति की किन किन चीजों को छूकर और सुनकर पहचान लेती थीं ?

(v) मनुष्य हमेशा किस चीज की आस लगाए रहता है ?

(vi) लोग किसे एक साधारण-सी चीज समझते हैं ?

भाषाबोध : -

२. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाओ ।

चिकना -

मुलायम-

सख्त -

ऊबड़-खाबड़ -

३. नीचे कुछ समरूपी शब्द दिए गए हैं, वाक्य बनाकर उनके अर्थ स्पष्ट करो-

में - मैं

मेल - मैल

ओर - और

दिन - दीन

४. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताओ ।

मिठाई - स्त्रीलिंग

भूख -

शांति -

भोलापन -

मौसम-

स्वर-

❖ ❖ ❖

कर्मवीर

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

देखकर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं ।
रह भरोसे भाग्य के, दुःख भोग पछताते नहीं ।।
काम कितना ही कठिन हो, किन्तु उकताते नहीं ।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं ।।
हो गये इक आन में उनके बुरे दिन भी भले ।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले-फले ।। १ ।।

जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं ।
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं ।।
आज-कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं ।
यत्न करने में कभी जो जी चुराते हैं नहीं ।।
बात है वह कौन, जो होती नहीं उनके लिए ।
वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिए ।। २ ।।

व्योम को छूते हुए दुर्गम पहाड़ों के शिखर ।
वे घने जंगल जहाँ रहता है तम आठों पहर ।।

गरजते जलराशि की उठती हुई ऊँची लहर ।
आग की भयदायिनी फैली दिशाओं में लबर ।।
वे कँपा सकतीं कभी जिसके कलेजे को नहीं ।
भूल कर भी वह नाकाम रहता है कहीं ? ।। ३ ।।

शब्द-अर्थ

बाधा	-	रुकावट;
विविध	-	तरह तरह की;
विघ्न	-	संकट;
उकताते	-	ऊबते;
भाग्य	-	किस्मत;
भोगना	-	सुख दुःख का अनुभव करना;
चंचल	-	अस्थिर;
इक	-	एक;
आन	-	क्षण, पल;
भले	-	अच्छे;
गँवाते	-	खोते, बिताते;
यत्न	-	प्रयास;
नमूना	-	उदाहरण;
औरों	-	दूसरों;

व्योम - आकाश;

दुर्गम - जहाँ कठिनाई में जाया जा सके;

शिखर - चोटी;

तम - अँधेरा;

आठों पहर - हर समय, (तीन घण्टों में एक पहर होता है);

जलराशि - समुद्र, सागर;

भयदायिनी - भयभीत करने वाली;

लबर - लपट;

कलेजा - हृदय;

नाकाम - असफल।

अनुशीलनी

1. सोचो और लिखो :

(i) सब जगह और सब काल में कौन फूले-फले मिलते हैं ?

(ii) कौन औरों के लिए नमूना बन जाते हैं ?

(iii) कौन भूलकर भी नाकाम नहीं रहता ?

(iv) क्षण भर में ही किनके बुरे दिन भले हो जाते हैं ?

(v) किनके लिए सब बातें अनुकूल होती हैं ?

(vi) किनके कलेजे को भय के सभी साधन डरा नहीं सकते ?

(vii) साहसी और कायर व्यक्तियों में क्या फर्क होता है ?

(vii) उदाहरण के अनुसार खाली जगहों को कोष्ठकके उपयुक्त शब्दों से भरो :

अपने समय को यों ही बितानेवाला - आलसी

काम करने की जगह बात बनाने वाला -

आजकल करके दिन गँवानेवाला -

यत्न करने में जी चुरानेवाला -

बहु विघ्न-बाधाओं से न घबरानेवाला -

हर बात में डरनेवाला -

(वीर, टालू, बातूनी, कामचोर, डरपोक)

भाषाबोध : -

2. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाओ :

चंचल, शिखर, विघ्न, नमूना

3. विपरीतार्थक शब्द लिखो : जैसे नीचा - ऊँचा

अच्छा, स्थिर, सुख, रात, वीर, भाग्य, नाकाम ।

4. निम्नलिखित वाक्यों में से संज्ञा पद चुनकर लिखो :

साहसी व्यक्ति अपने समय को बेकार में नष्ट नहीं करते ।

❖ ❖ ❖

छोटा जादूगर

जयशंकर प्रसाद

कार्निवल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी । हँसी और विनोद का कलनाद गूँज रहा था । मैं खड़ा था उस छोटे फूहारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप शरबत पीने वालों को देख रहा था । उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे । उसके मुँह पर गम्भीर विषाद के साथ धैर्य की रेखा थी । मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ । उसके अभाव में भी सम्पूर्णता थी । मैंने पूछा- ''क्यों जी तुमने इसमें क्या देखा ।''

''मैने सब देखा है । यहाँ चूड़ी फेंकते है । खिलौनों पर निशाना लगाते हैं । तीर से नम्बर छेदते हैं । मुझे तो खिलौनों पर निशाना लगाना अच्छा मालूम हुआ। जादूगर तो बिलकुल निकम्मा है । उनसे अच्छा तो ताश का खेल मैं ही दिखा सकता हूँ ।'' - उसने बड़ी प्रगल्भता से कहा ।

उसकी वाणी में कहीं रुकावट न थी।

मैंने पूछा- ''और उस परदे में क्या है ? वहाँ तुम गये थे ?''

''नहीं, वहाँ मैं नहीं जा सका । टिकट लगता है ।''

मैंने कहा - ''तो चलो, मैं वहाँ पर तुमको लिवा चलूँ ।'' मैंने मन-ही मन कहा- 'भाई । आज के तुम्हीं मित्र रहे ।'

उसने कहा- ''वहाँ जाकर क्या कीजियेगा ? चलिए निशाना लगाया जाए ।''

मैंने उससे सहमत होकर कहा- ‘‘तो फिर चलो, पहले शरबत पी लिया जाए।’’ उसने स्वीकार -सूचक सिर हिला दिया ।

मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी वहाँ गर्म हो रही है । हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले । राह में ही उससे पूछा- ‘‘तुम्हारे और कौन हैं ?’’

‘‘माँ और बाबूजी ।’’

‘‘उन्होंने तुमको यहाँ आने के लिए मना नहीं किया ?’’

‘‘बाबूजी जेल में हैं ।’’

‘‘क्यों ?’’

‘‘देश के लिए’’- वह गर्व से बोला ।

‘‘और तुम्हारी माँ !’’

‘‘वह बीमार है ।’’

‘‘और तुम तमाशा देख रहे हो !’’

उसके मुहँ पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी । उसने कहा, ‘‘तमाशा देखने नहीं, दिखाने निकला हूँ । कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा । मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, मुझे अधिक प्रसन्नता होती !’’

मैं आश्चर्य से उस तेरह-चौदह वर्ष कि लड़के को देखने लगा ।

‘‘हाँ मैं सच कहता हूँ, बाबू जी ! माँजी बीमार हैं; इसलिए मैं नहीं गया ।’’

‘‘कहाँ ?’’

‘‘जेल में ! जब कुछ लोग खेल-तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न दिखाकर माँ की दवा करूँ और अपना पेट भरूँ ।’’

मैंने दीर्घ निश्वास लिया। चारों ओर बिजली के लट्टू नाच रहे थे। मन व्यग्र हो उठा। मैंने उससे कहा- "अच्छा, चलो निशाना लगाया जाए।"

हम दोनों उस जगह पर पहुँचे, जहाँ खिलौने को गेंद से गिराया जाता था। मैंने बारह टिकट खरीदकर उस लड़के को दिये।

वह निकला पक्का निशानेबाज। उसका कोई गेंद खाली नहीं गया। देखने वाले दंग रह गये। उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया लेकिन उठाता कैसे? कुछ मेरे रूमाल में बँधे, कुछ जेब में रख लिये गये।

लड़के ने कहा- "बाबूजी, आपको तमाशा दिखाऊँगा। बाहर आइए। मैं चलता हूँ।" वह नौ-दो ग्यारह हो गया। मैंने मन-ही-मन कहा- "इतनी जल्दी आँख बदल गयी।"

मैं घूमकर पान की दुकान पर आ गया। पान खाकर बड़ी देर तक इधर-उधर टहलता देखता रहा। झूले के पास लोगों का ऊपर-नीचे आना देखने लगा। अकस्मात् किसी ने ऊपर के हिंडोले से पुकारा- "बाबूजी!"

मैंने पूछा- "कौन?"

"मैं हूँ छोटा जादूगर।"

X X X X

कलकता के सुरम्य बोटानिकल-उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी सी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मंडली के साथ बैठा हुआ मैं जलपान कर रहा था। बात हो रही थी। इतने में वही छोटा जादूगर दिखाई पड़ा। हाथ में चारखाने की खादी का झोला, साफ जाँघिया और आधी बाहों का कुरता।

सिर पर मेरा रूमाल सूत की रस्सी से बंधा हुआ था। मस्तानी चाल से झूमता हुआ आकर कहने लगा-

"बाबूजी नमस्ते! आज कहिए तो खेल दिखाऊँ।"

"नहीं जी, अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं।"

"फिर इसके बाद क्या गाना-बजाना होगा, बाबूजी?"

"नहीं जी- तुमको" क्रोध से कुछ और कहने जा रहा था। श्रीमती ने कहा- "दिखलाओ जी, तुम तो अच्छे आये। भला कुछ मन तो बहले।" मैं चुप हो गया; क्योंकि श्रीमती की वाणी में वह माँ की-सी मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लड़के को रोका नहीं जा सकता। उसने खेल आरम्भ किया।

उस दिन कार्निवल के सब खिलौने उसके खेल में अपना अभिनय करने लगे। भालू मनाने लगा। बिल्ली रूठने लगी। बन्दर घुड़कने लगा।

गुड़िया का ब्याह हुआ। गुड्डा वर काना निकला। लड़के की वाचालता से ही अभिनय हो रहा था। सब हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये।

मैं सोच रहा था। बालक को आवश्यकता ने कितना शीघ्र चतुर बना दिया। यही तो संसार है।

ताश के सब पत्ते लाल हो गये। फिर सब काले हो गये। गले की सूत की डोरी टुकड़े होकर जुड़ गई। लट्टू अपने से नाच रहे थे। मैंने कहा- "अब हो चुका। अपना खेल बटोर लो, हमलोग भी अब जायेंगे।"

श्रीमती जी ने धीरे से उसे एक रुपया दे दिया। वह उछल उठा।

मैंने कहा- "लड़के!"

“छोटा जादूगर कहिए । यही मेरा नाम है । इसी से मेरी जीविका है ।”

मैं कुछ बोलना ही चाहता था कि श्रीमती ने कहा- “अच्छा, तुम इस रुपये से क्या करोगे ?”

“पहले भरपेट पकौड़ी खाऊँगा । फिर एक सूती कम्बल लूँगा ।”

मेरा क्रोध अब लौट आया । मैं अपने पर बहुत क्रुद्ध होकर सोचने लगा- ‘ओह ! कितना स्वार्थी हूँ मैं । उसके एक रुपये पाने पर मैं ईर्ष्या करने लगा था न ।’

वह नमस्कार करके चला गया । हम लोग लता-कुञ्ज देखने के लिए चले ।

उस छोटे से बनावटी जंगल में संध्या साँय साँय करने लगी थी । अस्ताचलगामी सूर्य की अन्तिम किरण वृक्षों की पत्तियों से विदाई ले रही थी । एक शांत वातावरण था । हम लागे धीरे-धीरे मोटर से हावड़ा की ओर आ रहे थे ।

रह-रहकर छोटा जादूगर स्मरण होता था । सचमुच वह एक झोपड़ी के पास कम्बल कन्धे पर डाले खड़ा था । मैंने मोटर रोककर उससे पूछा- “तुम यहाँ कहाँ ?”

“मेरी माँ यहाँ है न । अब उसे अस्पताल वालों ने निकाल दिया है ।” मैं उतर गया । उस झोपड़ी में देखा, तो एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी ।”

छोटे जादूगर ने कम्बल ऊपर से डाल कर उसके शरीर से चिमटते हुए कहा- “माँ ।”

मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े ।

X X X X

बड़े दिन की छुट्टी की बात चली थी । मुझे अपने ऑफिस में समय से पहुँचना था । कलकता से मन ऊब गया था । फिर भी चलते-चलते एक बार उस उद्यान को देखने की इच्छा हुई । साथ-ही -साथ जादूगर भी दिखाई पड़ जाता तो, और भी मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा । जल्द लौट आना था ।

दस बज चुका था । मैंने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था । मोटर रोक कर उतर पड़ा । वहाँ बिल्ली रूठ रही थी । भालू मनाने चला था । ब्याह की तैयारी थी; यह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता की तरी नहीं थी । जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे स्वयं काँप जाता था । मानो उसके रोएँ रो रहे थे । मैं आश्चर्य से देख रहा था । खेल हो जाने पर पैसा बटोर कर उसने भीड़ में मुझे देखा । वह जैसे क्षण भर के लिए स्फूर्तिमान हो गया । मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा- ''आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं ?''

''माँ ने कहा है कि आज तुरन्त चले आना । मेरी घड़ी समीप है ।'' - अविचल भाव से उसने कहा ।

''तब भी तुम खेल दिखाने चले आये ।'' मैंने कुछ क्रोध से कहा । मनुष्य के सुख दु:ख का माप अपना ही साधन तो है । उसी के अनुपात से वह तुलना करता है ।

उसके मुँह पर वही परिचित तिरस्कार की रेखा फूट पड़ी ।

उसने कहा- ''क्यों न आता !''

और कुछ अधिक कहने में जैसे वह अपमान का अनुभव कर रहा था ।

क्षण-भर में मुझे अपनी भूल मालूम हो गई । उसके झोले को गाड़ी में फेंक कर उसे भी बैठाते हुए मैंने कहा- "जल्दी चलो ।" मोटरवाला मेरे बताए पथ पर चल पड़ा ।

कुछ ही मिनटों में मैं झोपड़ी के पास पहुँचा । जादूगर दौड़कर झोपड़ी में माँ-माँ पुकारते हुए घुसा । मैं भी पीछे था; किन्तु स्त्री के मुँह से, 'बे........' निकलकर रह गया । उसके दुर्बल हाथ उठकर गिर गये । जादूगर उससे लिपटा रो रहा था, मैं स्तब्ध था । उस उज्ज्वल धूप में समग्र संसार जैसे जादू सा मेरे चारों ओर नृत्य करने लगा ।

शब्दार्थ :

जगगमा रही थी	-	खूब चमक रही थी;
विनोद	-	मन बहलाने वाली बात, परिहास;
विषाद	-	दुःख;
निशाना	-	लक्ष;
प्रगल्भता	-	चतुर, प्रतिभाशाली;
रुकावट	-	अड़चन, बाधा;
वाणी	-	वचन;
तमाशा	-	वह खेल या कार्य जिसे देखने मे मन प्रसन्न हो;
लट्टू	-	एक प्रकार का गोल खिलौना, जिसे जमीन पर फेंक कर नचाया जाता है;

निशानेबाज	-	किसी को लक्ष्य बना कर उस पर वार करने वाला;
हिंडोले	-	पालने, झूले;
बोटानिकल	-	वनस्पति विभागीय;
मस्तानी	-	मतवाली;
झूमना	-	बारबार आगे पीछे, या नीचे ऊपर हिलना;
बटोर	-	समेट, इकट्ठा या जमा करना;
बनावटी	-	नकली, कृत्रिमता;
चिथड़े	-	फटे हुए कपड़े;
अविचल	-	अचल, जो अपने ध्यान से हटे नहीं;

अनुशीलनी

१. समझो और लिखो :

(i) लेखक ने छोटे जादूगर को कहाँ देखा और किस रूप में देखा ?

(ii) छोटे जादूगर ने लेखक को प्रगल्भता में क्या-क्या बताया ?

(iii) लेखक ने छोटे जादूगर को पाकर मन ही मन क्या कहा ?

(iv) लेखक और जादूगर दोनों शरबत पीने के बाद क्या करने चले गए ?

(v) लेखक ने जादूगर से ''तमाशा देख रहे हो'' पूछने पर उसने क्या उत्तर दिया ?

भाषाबोध : -

२. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ याद करो :

नौ-दो -ग्यारह होना = भाग जाना

नाम कमाना = प्रसिद्धि प्राप्त करना

नाम उछालना = बदनाम करना

नाक कटाना = बेइज्जती करना

३. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखो :

(i) उसके दुर्बल हाथ उठकर गिर गया ।

(ii) मेरा घड़ी समीप है ।

(iii) मैं आश्चर्य से देख रहे थे ।

(iv) हम लोग जलपान कर रहा है ।

(v) हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चला ।

४. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखो :

खिलौना - खिलौने	रुपया -
छोटा -	मेरा -
बोला -	आया-
बँधा -	हुआ -
अच्छा -	

❖ ❖ ❖

तारों की दुनिया में

(संकलित)

खुले आकाश में सूर्यास्त के बाद हमें तारे दिखाई देने लगते हैं । सूर्य के क्षितिज के नीचे जाने पर भी कुछ समय तक आकाश पर हल्का सा प्रकाश छाया रहता है । जब वह प्रकाश भी लुप्त होने लगता है तब क्रमशः तारे आकाश के पर्दे पर दिखलाई देने लगते हैं । वे कहाँ से आते हैं ? तारे किसी एक जगह से नहीं आते हैं और न वे एकाएक आकाश में प्रकट होते हैं । वे अंतरिक्ष में मौजूद रहते हैं, पर सूर्य की चमक दमक के आगे उनका तेज फीका पड़ जाता है और वे दिन में दिखाई नहीं देते । इतना ही नहीं, चंद्रमा के धीमे प्रकाश में भी कई तारे लुप्त हो जाते हैं । एक संस्कृत सुभाषित है :

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खाः शतानपि ।

एकः चन्द्रस्तमोहंति न तु तारागणोऽपिच ।।

अर्थ है : सौ मूर्ख पुत्रों से एक गुणवान पुत्र बेहतर है । देखो, एक चंद्रमा अंधकार दूर कर सकता है, जिस काम को सैकड़ों तारे नहीं कर पाते ।

वास्तव में कवि ने इस श्लोक में तारों के प्रति अन्याय किया है । तारे बहुत प्रकाशवान होते हैं । सूर्य भी एक तारा ही है । केवल निकट होने के कारण वह बहुत तेजस्वी लगता है । जैसे सौ वॉट पॉवर के बल्ब को एक फुट की दूरी से देखने का अगर हम दुस्साहस करें तो हमारी आँखें चकाचौंध हो जाएँगी, किन्तु वही बल्ब सौ मीटर की दूरी से देखने पर कितना मंद लगेगा । इसी प्रकार आकाश में दिखाई देने

वाले तारों में कई तारे सूर्य से भी कई गुना प्रकाशवान हैं, लेकन बहुत दूर होने के कारण वे मंद लगते हैं । और चन्द्रमा ? उसका प्रकाश तो उसका अपना नहीं है बल्कि सूर्य का बिखराया प्रकाश है ।

प्राचीन काल से तारों का अध्ययन करने वालों ने कई महत्त्व की बातें देखीं । उन्होंने देखा कि अधिकांश तारे सूर्य की तरह पूरब से उदय होकर पश्चिम दिशा में अस्त होते हैं । इसलिए यदि तुम कैमरे का शटर रात भर खुला रखकर आकाश का फोटो खींचोगे तो तुम्हारे फोटों में तारे नजर नहीं आएँगे । वहाँ नजर आएँगी गोलाकार कक्षाएँ ।

यदि फोटो उत्तरी गोलाई में खींचा जाए तो तुम देखोगे कि एक तारा ऐसा है जो कक्षा में घूमने के बजाय स्थिर नजर आएगा । वह है ध्रुव तारा जिसको हमारी पौराणिक कथाओं में महत्त्व का स्थान प्राप्त है । ध्रुव की कहानी संक्षेप में इस प्रकार है :

राजा उत्तानपाद के दो रानियाँ थीं- सुनीति और सुरुचि, जिनमें से सुरुचि उन्हें अधिक प्रिय थी । एक दिन सुरुचि के पुत्र उत्तम को अपने पिता की गोद में बैठे देखकर सुनीति के पुत्र ध्रुव ने भी वहाँ बैठना चाहा, परंतु सुरुचि ने उसे वहाँ से जबरदस्ती हटा दिया । इस घटना से क्षुब्ध होकर बालक ध्रुव ने भगवान नारायण की कड़ी तपस्या की । आखिर भगवान प्रसन्न होकर बोले, "बेटे, वर माँगो ।" तो ध्रुव ने ऐसे स्थान की माँग की जहाँ से उसे हटाया न जा सके । वही ध्रुव ही आकाश में अटल मालूम पड़ता है ।

किसी खास प्राकृतिक घटना को, जिसका कारण विज्ञान द्वारा नहीं मिलता, ऐसी लोक कथाओं में गढ़ लिया जाता है । लेकिन जैसे-जैसे विज्ञान उन्नति करता

जाता है, कारण-मीमांसा भी आगे चलकर हो ही जाती है । और फिर लोक कथा केवल एक मनोरंजक कहानी के रूप में ही रह जाती है ।

ध्रुव तारा अटल क्यों प्रतीत होता है ? ये सभी कक्षाएँ गोलाकार क्यों हैं ? दो हजार साल पहले यूनानी निरीक्षकों की यह धारणा थी कि पृथ्वी के चारों ओर ब्रह्मांड एक गेंद के रूप में फैला हुआ है और यह गेंद एक धुरी पर घूमती है। इस धारणा के अनुसार तारे इस गेंद पर चिपके प्रकाश स्रोत हैं जो गेंद के साथ-साथ घूमते हैं । ध्रुव तारा गेंद की धुरी पर होने के कारण नहीं घूमता । (एक गेंद का किसी भी व्यास के चारों ओर घुमाकर देखो । गेंद की सतह पर दो बिंदु ऐसे मिलेंगे जो सदा स्थिर रहते हैं ।)

पाँचवीं सदी में जन्मे भारतीय ज्योतिर्विद आर्यभट्ट ने इस धारणा का खंडन किया था । अपने ग्रंथ 'आर्यभटीय' में उन्होंने यह दलील दी :

जिस प्रकार नदी के तट पर वस्तुओं (पेड़, मकान, आदि) को नाव में बैठा व्यक्ति उलटी दिशा में जाते देखता है उसी प्रकार स्थिर तारे पृथ्वी से देखने पर पश्चिम दिशा में जाते दिखाई देते हैं । इसलिए आर्यभट्ट का यह दावा सही है कि ब्रह्मांड के तारे स्थिर हैं और हमारी पृथ्वी ही अपनी उतर-दक्षिण धुरी पर घूमती है । घूमती पृथ्वी से देखने पर भी तारे घूमते नजर आते हैं । लेकिन तत्कालीन एवं आर्यभट्ट के बाद के विद्वानों ने सही दलील को समर्थन नहीं किया और दुर्भाग्य से इस विचारधारा को दस शताब्दियों तक उपेक्षित रहना पड़ा । सोहलवीं सदी में कोपर्निकस के विचारों का प्रभाव जैसे-जैसे बढ़ने लगा वैसे-वैसे स्थिर पृथ्वी की कल्पना दोलायमान होती गई ।

आज हम यह जानते हैं कि पृथ्वी एक लट्टू की तरह अपनी धुरी पर चारों ओर घूमती है और यह धुरी उत्तर दिशा में ध्रुव तारे की ओर है । हाँ, इस लट्टू के उदाहरण

में एक और तथ्य भी छिपा है। जब तुम एक लट्टू को घुमाते हो तो क्या उसकी धुरी स्थिर रहती है। नहीं। वह भी धीरे-धीरे शंकु बनाते हुए घुमा करती है। इसी तरह पृथ्वी की धुरी भी अंतरिक्ष में स्थिर नहीं है। वह भी धीरे-धीरे घूमती हुई लगभग २०,००० वर्षों में एक चक्कर पूरा करती है। इसका मतलब यह हुआ कि सर्वदा यह धुरी ध्रुवतारे की ओर नहीं रहेगी। करीब ५,००० वर्ष पहले पृथ्वीवासियों को ध्रुव तारा भी घूमता नजर आता होगा क्योंकि उस समय अटल स्थान था थुबैन तारे का ! इसी प्रकार भविष्य में ११,००० वर्षों के उपरान्त ध्रुव के बजाय वेगा अटल तारा होगा।

यदि हम आकाश के तारों को ध्यान से देखें और कई महीने अपने निरीक्षण को जारी रखें तो हमें एक और बात दिखाई देगी। सामान्यतः हर तारा अपने पड़ोसी तारों की पृष्ठभूमि में स्थिर दिखाई देगा। यानी तारों के पटल पर कुछ इने-गिने अपवाद छोड़कर सभी तारे स्थिर रहते हैं। केवल पृथ्वी के घूमने के कारण यह तारा-पटल पूर्व से पश्चिम को सरकता नजर आता है।

जो इने-गिने अपवाद है उन्हें ग्रह कहते हैं। यूनानी निरीक्षकों ने ग्रहों को 'प्लेनेट' यानी घुमक्कड़ कहा, क्योंकि उन्हें इनकी गति में अनियमितता दिखाई दी। तारा पटल पर या सूर्य की दिशा से तुलना करने पर ग्रह कभी आगे कभी पीछे जाते दिखाई देते हैं।

मानव स्वयं को विचारवान जीव समझता है, किंतु प्रत्यक्ष आचरण में अपनी विचारशीलता को सर्वदा काम में नहीं लाता। खासकर जब वह सृष्टि की घटनाओं में विचित्रता पाता है तब वह अक्सर अंधविश्वासों का शिकार हो जाता है, जैसे ग्रहों की विचित्र गति को देखकर सामान्य मानव ने यह धारणा बना ली कि इन ग्रहों में कुछ विशेष शक्ति होती है जिसके बल पर वे इधर-उधर भटकते हैं।

फिर इसी धारणा ने फलित ज्योतिष को प्रोत्साहित किया। ''यदि ग्रहों में कोई खास शक्ति है तो हो सकता है उसका प्रभाव मानव जीवन पर भी पड़ता हो'' - इस प्रकार की कल्पना से मानव को लगने लगा कि उसके जीवन का नियंत्रण इन ग्रहों के प्रभाव से होता है।

ग्रहों के घूमने की पहेली सुलझी सत्रहवीं सदी में जब योहान केप्लर ने ग्रहों के निरीक्षणों का विश्लेषण करके यह सिद्ध किया कि ग्रह मनमाने नहीं भटकते बल्कि वे नियमित कक्षाओं में चारें ओर घूमते हैं। अपने तीन नियमों द्वारा केप्लर ने ग्रहों की गति का पूरा विवरण दिया और उसी सदी में आइजक न्यूटन ने उन तीनों नियमों का संबंध सूर्य के गुरुत्वाकर्षण से जोड़ा। इस प्रकार अब हम जानते हैं कि ग्रह शक्तिवान एवं स्वेच्छाचारी न होकर सूर्य के गुरुत्वाकर्षण द्वारा नियमित कक्षाओं में घूमते हैं। अतः जिस भ्रामक धारणा ने फलित ज्योतिष को प्रोत्साहित किया उसका अब कोई सबूत नहीं रहा।

ग्रह और तारों का फर्क अब स्पष्ट हो चुका है। हमारे सूर्य के चारों ओर घूमने वाले ग्रह, तारों की अपेक्षा हमारे काफी निकट हैं, परंतु तारों की भाँति स्वयं प्रकाशित न होने के कारण दूसरे तारों के ग्रहों को देखना मुश्किल है। यह संभव है कि अन्य तारों की भी ग्रहमालाएँ हों।

ग्रह पास हैं, तारे दूर हैं, लेकिन ये दूरियाँ कितनी लंबी ?

सन १८३८ में बेसल नामक एक जर्मन ज्यातिर्विद ने तारों की दूरियाँ नापने के लिए पैरलैक्स विधि को सफलतापूर्वक अपनाया। इस विधि से आसपास के लगभग सात सौ तारों की दूरियाँ आज हम नाप सकते हैं। किंतु आकाश में हम जिन

तारों को अपनी आँखों से देख पाते हैं उनमें से अधिकांश तारों की दूरियाँ इतनी अधिक हैं कि उन्हें नापने के लिए पैरलेक्स प्रणाली भी कामयाब नहीं होती है । आज ऐसी स्थिति है कि जो तारा हम देख सकते हैं उसकी दूरी पैरलैक्स विधि से नाप नहीं सकते और जिसकी दूरी हम नाप सकते हैं उसे देख नहीं सकते ।

शब्दार्थ :

प्रसन्न	-	आनंदित;
दलील	-	युक्तितर्क;
धुरी	-	अक्ष;
भ्रामक	-	भ्रम पैदा करनेवाला, गलत;
विधि	-	नियम ।

अनुशीलनी

१. समझो और लिखो :

(i) तारे हमें कब और कहाँ दिखाई देते हैं ?
(ii) तारों का तेज क्यों फीका पड़ जाता है ?
(iii) सौ पुत्रों की जगह एक गुणवान पुत्र क्यों बेहतर है ?
(iv) तारे कहाँ से उदय होकर कहाँ अस्त होते हैं ?
(v) फोटो खींचने पर फोटो में तारे नजर न आकर क्या नजर में आती हैं ?
(vi) पृथ्वी से देखने पर उधर तारे किस ओर जाते दिखाई देते है ?
(vii) ध्रुव तारा अटल क्यों प्रतीत होता है ?
(viii) यूनानी निरीक्षकों की दो हजार साल पहले तारों के बारे में क्या धारणा थी ?

(ix) पृथ्वी एक लट्टू की तरह किस ओर कहाँ घूमती है ?

(x) बेसल ने तारों की दुरियाँ नापने के लिए किस बिधि को सफलता पूर्वक अपनाया ?

२. सही उत्तर की सामने (✓) चिह्न लगाओ ।

(i) सौ मुर्ख पुत्रों से कौन अच्छा है ?

(क) एक मूर्ख पुत्र

(ख) एक गुणवान पुत्र

(ग) सौ गुणवान पुत्र

(घ) एक गुणवान पुत्री

(ii) इनमें से कौन सा कथन सही है ?

(क) तारोंका अपना प्रकाश होता है ।

(ख) तारों का अपना प्रकाश नहीं होता ।

(ग) ग्रहों का अपना प्रकाश होता है ।

(घ) तारे सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं ।

(iii) सुनीति और सुरुचि किसके रानियाँ थीं ?

(क) राजा भगीरथ

(ख) राजा दशरथ

(ग) राजा उत्तानपाद

(घ) राजा भोज

(iv) पृथ्वी के चारों ओर ब्रह्माण्ड किस रूप में फैला हुआ है ?

(क) एक थैली के रूप में

(ख) एक गेंद के रूप में

(ग) एक टोकरी के रूप में

(घ) एक हाँडी के रूप में

(v) **किस विद्वान ने पहले कहा था कि तारे स्थिर हैं ?**

(क) बाणभट्ट ने

(ख) विक्रमभट्ट ने

(ग) आर्यभट्ट ने

(घ) सूर्यभट्ट ने

३. मौखिक कार्य :

आसमान में तारों को देखने से तुम्हें क्या लगता है ? कहो ।

भाषाबोध : -

४. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखो :

ज्योतीर्विद, दुरियाँ, प्रनाली,मुशकील, मुर्ख, मिमांशा, धृव, पौराणीक ।

५. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाओ :

तारे, मूर्ख, घटना, गेंद, मनोरंजन, मुश्किल

६. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताओ :

धारणा -

आकाश -

दलील -

खंडन -

घटना -

गोद -

७. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण रूप लिखो :

जैसे : **मानव - मानवीय**

स्वर्ग - ....

भारत - ....

ग्रह - ....

स्थान - ....

❖ ❖ ❖

हार नहीं होती

(संकलित)

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती ।

नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है ।

मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है ।

आखिर उनकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती ।

डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा-जाकर खाली हाथ लौटकर आता है।

मिलते न सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में।

मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती ।

असफलता एक चुनैती है, स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो ।

जब तक न सफल हो, नींद चैन की त्यागो तुम,
संघर्षों का मैदान छोड़ मत भागो तुम ।

कुछ किए बिना ही जय-जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती ।

शब्दार्थ :

कोशिश - प्रयास
रग - नस
आखिर - अंत में
शोताखोर - डुबकी मारने वाले
हैरानी - परेशानी
चुनौती - ललकार

अनुशीलनी

१. समझो और लिखो :

(i) चींटी से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?
(ii) कैसे लोगों की हार नहीं होती ?
(iii) गोताखोर से हमें क्या प्रेरणा मिलती है ?
(iv) असफलता को चुनौती क्यों माना गया है ?
(v) व्यक्ति की जयजयकार कब होती है ?

२. निम्नलिखित पंक्तियों के अर्थ अपने शब्दों में लिखो ।

(i) आखिर उनकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती ।

(ii) असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो ।

३. निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा करो :

(i) डुबकियाँ सिंधु में ....,
.... लौटकर आता है।

(ii) कुछ किए बिना ही ....
.... करने वालों की .... ।

४. भाषाबोध :

(i) निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखो ।

हार - ....

सिंधु - ....

नौका - ....

पानी - ....

(ii) पाठ से कर्त्ता और क्रिया पद चुनकर उनका संबंध समझिए ।
कुछ वाक्य भी बनाइए ।

❖ ❖ ❖

महाभारत का एक पृष्ठ

(संकलित)

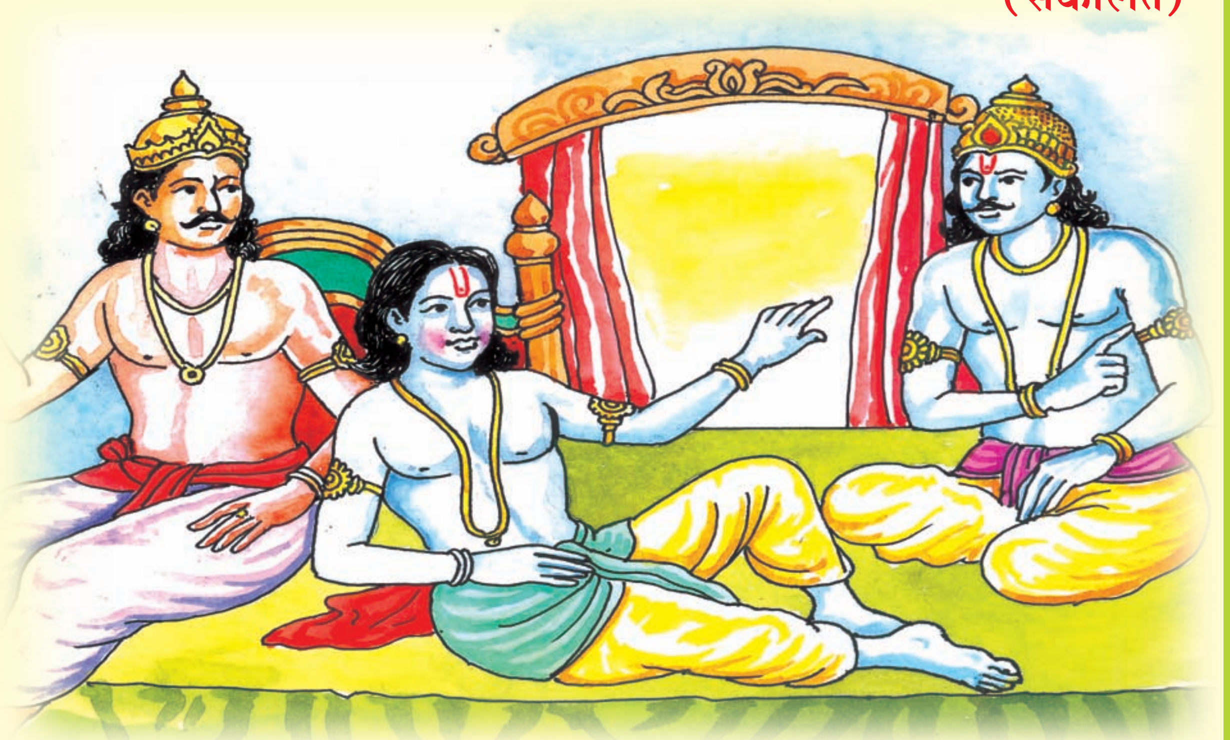

मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग किया है विचारों ने । जीवन में व्यवहार और विचार ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं । उन्नत विचार मनुष्य को ऊपर उठा देते हैं और निम्न विचार नीचे गिरा देते हैं । अतः व्यक्ति को व्यवहार में शिष्ट रहना चाहिए ।

महाभारत में एक कथा है । जब यह निश्चित हो गया कि पांडवों और कौरवों में सुलह नहीं हो सकती और युद्ध होकर ही रहेगा, तब दोनों पक्षों ने अपनी-अपनी सेना तैयार करनी शुरू कर दी । हर पक्ष चाहता था कि अधिक-से-अधिक देश के राजागण उसके पक्ष में हों । देश की बड़ी-बड़ी शक्तियाँ युद्ध की तैयारी करने लगीं । कौरव और पांडव दोनों चाहते थे कि श्रीकृष्ण उनके पक्ष में हों । उन दिनों भगवान कृष्ण द्वारिका के राजसिंहासन पर विराजमान थे ।

पांडवों की ओर से अर्जुन और कौरवों की ओर से दुर्योधन-दोनों श्रीकृष्ण से सहायता लेने के लिए उनके पास गए ।

यह संयोग था कि दोनों एक ही समय श्रीकृष्ण के पास पहुँचे । जब वे पहुँचे तब श्रीकृष्ण सो रहे थे ।

श्रीकृष्ण के पास पहले दुर्योधन पहुँचा । वह उनके सिर के पास बैठकर उनके जागने की प्रतीक्षा करने लगा ।

दुर्योधन के बाद अर्जुन पहुँचा । वह चुपचाप उनके पैरों की ओर बैठ गया ।

कुछ देर बाद श्रीकृष्ण की आँखें खुलीं । उन्होंने अपने पैरों की ओर सामने बैठे हुए अर्जुन को देखा । अर्जुन को देखते ही श्रीकृष्ण ने पूछा - "कहो पार्थ ! कैसे आना हुआ ?" और वे अर्जुन से बातें करने लगे ।

दुर्योधन उनके सिर की ओर बैठा हुआ था, अत: वे उसे नहीं देख पाए । इस पर दुर्योधन को क्रोध आ गया । किंतु उसने सोचा, कहीं ऐसा न हो श्रीकृष्ण युद्ध में अर्जुन को सहायता का वचन दे दें और मैं बैठा ही रह जाऊँ ! अत: वह अपना क्रोध दबाकर बोला- वासुदेव ! मैं अर्जुन से पहले आपके पास आया हूँ । अत: आप मेरी बात पहले सुनें ।

श्रीकृष्ण ने दुर्योधन की ओर देखते हुए कहा-कौरवराज ! आप मेरे पास पहले आए होंगे, पर मैंने सबसे पहले अर्जुन को देखा है । अत: इसकी बात पहले सुनना स्वाभाविक है ।

दुर्योधन के पास इसका कोई उत्तर नहीं था । भूल उसी की थी ।

अर्जुन और दुर्योधन दोनों एक ही कार्य के लिए श्रीकृष्ण के पास आए थे । दोनों चाहते थे कि कृष्ण युद्ध में उनकी ओर से लड़ें ।

पहले उन्होंने अर्जुन से पूछा, ''अर्जुन ! तुम किसलिए आए हो ?''

अर्जुन ने उत्तर दिया, ''पांडव चाहते हैं कि आप युद्ध में हमारी सहायता करें।''

तत्पश्चात् उन्होंने दुर्योधन से पूछा, ''कौरवराज ! अब आप बताएँ कि आप मेरे पास किस कार्य के लिए आए हैं ?''

दुर्योधन ने उत्तर दिया कि मैं भी आपके पास इसी कार्य के लिए आया हूँ ।

कृष्ण ने उत्तर दिया, ''आप दोनों मेरे पास एक ही कार्य के लिए आए हैं। मैं दोनों को निराश नहीं करना चाहता । मेरा यह प्रस्ताव है कि इस युद्ध में मैं एक ओर रहूँगा और मेरी यादव सेना दूसरी ओर से युद्ध करेगी, अर्थात् एक तरफ मैं और दूसरी तरफ मेरी संपूर्ण वाहिनी । पर मैं युद्ध में शस्त्र नहीं उठाऊँगा । चुनने का अवसर मैं पहले अर्जुन को देता हूँ । पहले वह चुने कि इनमें से वह क्या चाहता है ?''

अर्जुन ने उत्तर दिया, ''मैं चाहता हूँ कि आप युद्ध में हमारी सहायता करें । इसकी हमें कोई चिंता नहीं कि आप युद्ध में शस्त्र उठाते हैं या नहीं ।''

दुर्योधन यह सुनकर मन में बड़ा प्रसन्न हुआ । उसने सोचा कि जो व्यक्ति युद्ध में शस्त्र ही नहीं उठाएगा उसे लेकर मैं क्या करूँगा । उसने अर्जुन के प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया ।

और विश्व जानता है कि दुर्योधन को यह खुशी बड़ी महँगी पड़ी। सारे युद्ध के केंद्र-बिंदु श्रीकृष्ण रहे । और जब-जब पांडवों पर विपत्ति पड़ी तो श्रीकृष्ण ने उन्हें उबारा । पांडवों को विजय-मुकुट पहनाने वाले श्रीकृष्ण ही थे ।

शब्दार्थ :

संयोग	-	मेल, अचानक मेल होना;
उन्नत	-	ऊँचे;
वासुदेव	-	वसुदेव का पुत्र, श्रीकृष्ण;
निम्न	-	नीचा, घटिया;
वाहिनी	-	सेना;
शिष्ट	-	सभ्य;
सहर्ष	-	प्रसन्नतापूर्वक;
पक्ष	-	लड़नेवालों में से एक दल, सेना, फौज;
विश्व	-	संसार;
मुक्ति	-	छुटकारा, मोक्ष;
विराजमान	-	विद्यमान, सुशोभित;
विजय मुकुट	-	विजय का ताज ।

अनुशीलनी

१. समझो और लिखो :

(i) मनुष्य को ऊपर उठाने वाले ओर नीचे गिराने वाले कौन से विचार हैं ?

(ii) व्यक्ति को व्यवहार में कैसा रहना चाहिए ?

(iii) श्रीकृष्ण के पास कौन-कौन सहायता लेने के लिए पहुँचे ?

(iv) महाभारत में क्या है ?

(v) अर्जुन को देखते ही श्रीकृष्ण ने उनसे क्या पूछा ?

(vi) अर्जुन और दुर्योधन श्रीकृष्ण के पास क्यों गए थे ?

(vii) पाण्डवों पर जब-जब आपत्ति पड़ी किसने उन्हें मुसीवत से मुक्ति दिलाई ?

२. भाषावोध :

निम्नलिखित शब्दों के आधार पर वाक्यों में दिए गए शून्यस्थानों की पूर्ति करो :

(व्यवहार, कथा, दुर्योधन, श्रीकृष्ण)

(i) जीवन में -------- और विचार ही सब से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

(ii) महाभारत में एक -------- है ।

(iii) -------- उनके सिर की ओर बैठा था ।

(iv) सारे युद्ध के केन्द्रविन्दु -------- रहे ।

समझो और शब्दों के जोड़े बनाओ :

हाड़ - मांस :

दाल :

हाथ :

नहाना :

सिर :

पति :

३. ईय प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाओ :

भारत - भारतीय

जाति -

मानव -

क्षेत्र -

४. इस पाठ से कम-से-कम १० सर्वनाम चुनो ।

❖ ❖ ❖

छोटी-सी हमारी नदी

रवींद्रनाथ ठाकुर

छोटी - सी हमारी नदी टेढ़ी-मेढ़ी धार,
गर्मियों में घुटने भिगोकर लोग जाते पार ।
पार जाते ढोर-डंगर, बैलगाड़ी चालू,
ऊँचे हैं किनारे इसके, पाट इसका ढालू ।
पेट में झकाझक बालू कीचड़ का न नाम,
काँस फूले उस पार उजले जैसे चीकने घाम ।
दिन भर किचिरमिचिर करते पंछी डार-डार,
रात को हुआँ-हुआँ करते दल के दल सियार ।
अमराई सजधजी किनारे और ताड़-वन,
छाँहों-छाँहों बाम्हन टोला बसा है सघन ।
कच्चे-बच्चे धार-कछारों पर नहायें उछलें,
गमछों में पानी भर-भर अंग-अंग पर डालें ।
कभी-कभी वे साँझ-सकारे निबटा कर नहाना
छोटी-छोटी मछली मारें आँचल का कर छाना ।
बहुएँ लोटे-थाल माँजती रगड़-रगड़ कर रेती,
कपड़े धोतीं, घर के कामों के लिए चल देतीं ।
जैसे ही आषाढ़ बरसता, भर नदियाँ उतराती,
कलकल छलछल छूटी चलती तेज धार मदमाती ।

वेग और कलरव के मारे उठता कोलाहल,
गँदले जल में घिरनी-भँवरी भँवराती चंचल।
दोनों पारों के वन-वन में मच जाता है हल्ला,
वर्षा के उत्सव में सारा जग उठता है फूला ।

शब्द-अर्थ

टेढ़ी-मेढ़ी - जो सीधा न हो, वक्र;

ढोर - डंगर - चौपाया, पशु;

झकाझक- खूब साफ और चमकता हुआ,

काँस -एकप्रकार की लम्बी घास;

पाट-रेतीला भाग;

ढालू- ढलान;

उजले- चमकदार;

घाम-धूप;

हुआँ-हुआँ - सियार की ध्वनि;

बाम्हन- ब्राह्मण,

टोला- नगर का एक भाग,

कछार- नदी के किनारे की तर और नीची भूमि;

गमछा - शरीर पोंछने का कपड़ा;

निबटा-समाप्त कर;

छाना- छन्नी;

मदमाती-मस्त

भँवराती - चक्कर काटती हुई;

रेती-बलुई मिट्टी;

अनुशीलनी

१. समझो और लिखो :

(I) छोटी-सी नदी के बारे में जो जानकारी मिली उसे अपने शब्दों में लिखो।

(ii) नदी को देखकर बच्चे क्या करते हैं ?

(iii) आषाढ़ की नदी किस प्रकार का रूप धारण करती है ?

(iv) नदी के दोनों ओर का दृश्य कैसा बन जाता है ?

(v) तुमने अगर कोई नदी देखी हो तो अपना अनुभव लिखो ।

२. छोटी सी नदी के बारे में तुमने जो कविता पढ़ी है, एक चित्र बनाकर उसमें उन सही बातों को दिखाओ । बताओ कि तुमने चित्र में क्या क्या दर्शाया ?

चित्र :

....

....

....

....

३. **निम्नलिखित पदों में कौन-कौन से शब्द छुट गए हैं, लिखो :**

(i) दोनों पारों के .... में मच जाता है ....,
.... उत्सव में .... उठता है फूला ।

(ii) कभी-कभी वे .... निबटा कर नहाना
.... मछली मारें .... छाना ।

४. **निम्नलिखित शब्दों के जोड़े को देखकर तुम इस प्रकार के और शब्दों के जोड़े ढूँढ़ कर लिखो :**

कभी-कभी

....

....

....

....

५. **निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके उनसे वाक्य बनाओ :**

कीनारे

मतवालि

बैलगाड़ि

आषाढ़

टेढ़ि-मेढ़ि

❖ ❖ ❖

महामंत्री चाणक्य

अमरनाथ शुक्ल

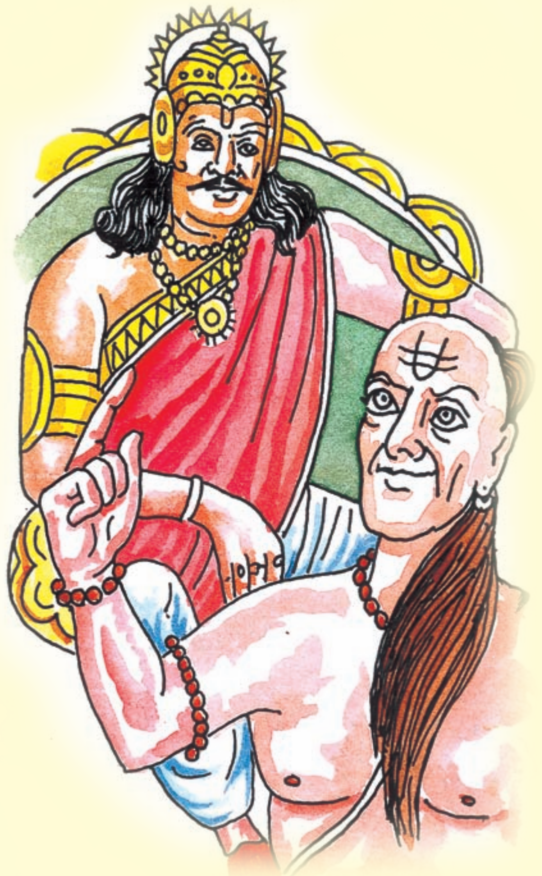

चंद्रगुप्त मौर्य का शासन काल भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल था। इस काल में भारत का यश-वैभव चारों दिशाओं में फैला था । चंद्रगुप्त को गड़रिया-पुत्र से सम्राट बनाने का कार्य आचार्य चाणक्य ने किया । चाणक्य अपनी धुन के पक्के थे-वे जो बात एक बार ठान लेते, उसे पूरी करके ही रहते थे । वे तपस्वी थे, सीधा-सादा जीवन व्यतीत करते थे । चंद्रगुप्त को सम्राट बनाने के बाद देश को नया और मजबूत रूप देने के लिए चाणक्य स्वयं ही महामंत्री बने ।

इस त्यागी महापुरुष की तपस्या का फल भारत को मिला । भारत और भी अधिक-सम्पन्न बना । दूर-दूर के देशों तक भारत की कीर्ति फैलने लगी । उसी काल में यूनानी दूत मेगस्थनीज़ भारत आया । भारत की अच्छी व्यवस्था तथा देश की जनता की खुशहाली देखकर वह बहुत अधिक प्रभावित हुआ । उसने चाणक्य की बहुत प्रशंसा सुनी थी । उसने सम्राट चंद्रगुप्त से एक बार महामंत्री चाणक्य से मिलने की इच्छा प्रकट की ।

एक दिन सम्राट चंद्रगुप्त मेगस्थनीज़ को साथ लेकर एक साधारण से आश्रम में पहुँचे। उन्होंने द्वार पर जूते उतार कर अंदर प्रवेश किया । सामने चटाई पर एक व्यक्ति अपने विचारों में खोया बैठा था । उसके हाथ में लेखनी थी और सामने चौकी पर कुछ भोजपत्र थे । उसका रंग काला था, गाय की पूँछ के बराबर चोटी के अलावा सिर मुडा था। कमर के नीचे का भाग एक धोती से लिपटा था, शेष शरीर पर कोई वस्त्र नहीं था, वह मोटा जनेऊ पहने था । उसके चेहरे से यह अवश्य मालूम पड़ता था कि वह कोई महान व्यक्ति है और अपनी लगन का पक्का है ।

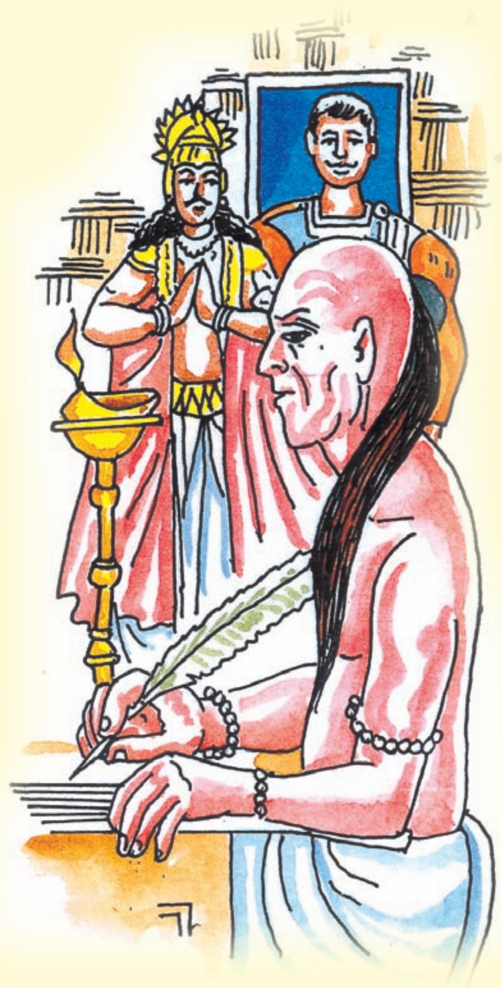

उसे प्रणाम कर सम्राट और मेगस्थनीज़ दोनों चटाई पर बैठ गए । उसने एक बार दोनों को आँख उठाकर देखा, फिर अपने काम में लग गया । थोड़ी देर बाद मेगस्थनीज़ सहित सम्राट चंद्रगुप्त अपने महल में लौट आये ।

वापस आने पर मेगस्थनीज़ ने प्रश्न किया, सम्राट ! आज तो आप महामंत्री से मिलने वाले थे ।

हँसकर सम्राट ने कहा, 'वे महामंत्री ही थे, जिनके पास हम आपके साथ गये थे।'

मेगस्थनीज़ यह सुनकर आश्चर्यचकित हो गया । वह सोचने लगा, इतने विराट और वैभव-सम्पन्न राष्ट्र का महामंत्री एक झोपड़ी में रहता है और सम्राट उसे प्रणाम करते हैं जबकि वह कुछ बोलता तक नहीं ।

फिर उसने सम्राट से निवेदन किया, मैं इस महापुरुष से दोबारा मिलना चाहता हूँ। उनसे मेरी भेंट कराने की कृपा करें ।

चाणक्य ने मेगस्थनीज़ को मिलने का समय दे दिया । निश्चित समय पर मेगास्थनीज उनकी सेवा में पहुँचा । महामंत्री सदैव की तरह अपने काम में व्यस्त थे । मेगस्थनीज़ के पहुँचने पर उन्होंने एक दीपक बुझा दिया और दूसरा दीपक जला दिया और बोले, 'आपकी क्या सेवा करूँ ?'

मेगस्थनीज़ का आश्चर्य बढ़ा, उसने कहा, जिज्ञासाएँ तो बहुत-सी हैं, लेकिन अब एक नयी जिज्ञासा उत्पन्न कर दी आपने । आपने एक दीपक क्यों बुझा दिया और दूसरा क्यों जला दिया ?'

चाणक्य ने अत्यन्त सरलता से उत्तर दिया, 'अभी तक मैं महामंत्री की हैसियत से राष्ट्र का काम कर रहा था । अब मैं चाणक्य की हैसियत से आपसे निजी बातचीत कर रहा हूँ । उस दीपक में राष्ट्र का तेल है । निजी कार्य के लिए राष्ट्रीय सम्पति का उपयोग करना तो घोर अपराध है । यदि नियम-कानून बनाने वाले ही उन नियमों को तोड़ेंगे, तो उनका पालन अधिकारियों और जनता से कैसे कराएँगे ?'

चाणक्य के कथन को सुनकर मेगस्थनीज़ गद्‌गद् हो गया । उसका रोम-रोम इस महान् तपस्वी को प्रणाम कर रहा था । उसका शीश झुक गया और उसके मुख से निकला, 'धन्य है यह देश जहाँ आप जैसे महामंत्री हैं । सम्राट से आपके विषय में सुना था और अब अच्छी तरह जान गया हूँ । आपके देश की उन्नति में आपके चरित्र की प्रेरणा मुख्य है । केवल एक प्रश्न के उत्तर से मेरी सारी जिज्ञासाएँ शान्त हो गई हैं ।

शब्दार्थ :

स्वर्णकाल	-	सर्वश्रेष्ठ काल;
गद्‌गद् होना	-	बहुत प्रसन्न होना;
नमन	-	प्रणाम;
यश-वैभव	-	नाम और धन दौलत;
जिज्ञासा	-	जानने की इच्छा;
धुन का पक्का	-	दृढ निश्चय वाला;
विराट	-	विशाल;
वैभव-सम्पन्न	-	समृद्धिशाली;
भोजपत्र	-	प्राचीन काल में एक विशेष पेड़ 'भोज' का पत्ता, उस पर कागज़ की तरह लिखा जाता था ।

अनुशीलनी

समझो और लिखो :

(क) नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो:

(i) किसके शासन काल को भारत के इतिहास का स्वर्णकाल कहते हैं और क्यों ?

(ii) चाणक्य कौन थे ? उनके जीवन के विषय में पाँच वाक्य लिखो ।

(iii) किसकी तपस्या से भारत की कीर्ति दूर-दूर तक फैली ?

(iv) यूनानी राजदूत मेगस्थनीज़ ने किससे मिलने की इच्छा प्रकट की ?

(v) चाणक्य से भेंट होने पर मेगस्थनीज़ पर क्या प्रभाव पड़ा ?

२. नीचे लिखे वाक्यों के सही अन्त चुनो:

(i) मेगस्थानीज़ के पहुँचने पर चाणक्य ने दीपक बुझा दिया, क्योंकि

- वह बेकार ही दीपक नहीं जलाना चाहते थे ।
- दीपक में तेल बहुत ही कम रह गया था ।
- उस दीपक में राष्ट्र का तेल था और वे निजी कार्य के लिए राष्ट्रीय सम्पत्ति का उपयोग करना घोर अपराध मानते थे ।

(ii) चंद्रगुप्त मौर्य का शासन काल भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल था, क्योंकि-

- इस काल में दूर-दूर से विदेशी पर्यटक भारत में आये ।
- इस काल में भारत का यश-वैभव चारों दिशाओं में फैला ।
- इस काल में भारत ने बहुत समृद्धि प्राप्त की ।

(iii) चाणक्य एक आश्रम में, एक साधारण ब्राह्मण जैसे रहते थे, क्योंकि
- वे एक त्यागी महापुरुष थे ।
- उन्हें यश-वैभव का मोह नहीं था ।
- देश की सेवा ही उनके लिए सर्वोत्तम सम्मान था ।

३. नीचे लिखे शब्दों की सहायता से वाक्यों के खाली स्थान भरो:
(स्वर्णकाल, वैभव-संपन्न, आश्चर्यचकित, जिज्ञासाएँ)

(I) केवल एक प्रश्न के उत्तर से मेरी सारी............. शांत हो गई हैं ।
(ii) चंद्रगुप्त मौर्य का शासन काल भारतीय इतिहास का.......... था ।
(iii) इतने विराट और .... राष्ट्र का महामंत्री एक झोंपड़ी में रहता है ।
(iv) मेगस्थानीज़ यह सुनकर .... हो गया ।

४. नीचे लिखे कथन किसके हैं ।

(i) वे महामंत्री ही थे, जिनके पास हम आप के साथ गये थे ।
(ii) जिज्ञासाएँ तो आपसे बहुत-सी हैं, लेकिन अब एक नई जिज्ञासा उत्पन्न कर दी आपने ।
(iii) निजी कार्य के लिए राष्ट्रीय सम्पत्ति का उपयोग करना तो घोर अपराध है।

भाषा-ज्ञान :

जो संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति का नाम बताते हैं उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं ।

१. पाठ में आए हुए व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द चुनो और उनके बारे में पाँच-पाँच पंक्तियाँ लिखो ।

जो संज्ञा शब्द व्यक्तियों, वस्तुओं आदि की पूरी जाति को बताते हैं, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे- मनुष्य, किताब, आश्रम, गाय, घर, कोयल, शिक्षक, लेखक,मंत्री आदि।

पाठ में आए हुए कोई भी पाँच जातिवाचक संज्ञा शब्दों से वाक्य बनाओ ।

३. उदाहरण के अनुसार नीचे लिखे शब्दों से नये शब्द बनाओ और उनके अर्थ लिखो:

उदाहरण: भारत-भारतीय = भारत का, भारत से संबंधित

(I) राष्ट्र -

(ii) शासक -

(iii) दर्शन -

४. नीचे दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द पाठ से चुनो:

(I) काया - .... (ख) राजा - ....

(ii) समान - .... (क) हस्त - ....

(iii) तीव्र - .... (च) दिन - ....

शिक्षक से:

चाणक्य के कार्य-कलाप का ज्ञान छात्रों को कराएँ

चाणक्य के जीवन एवं आज के भोगवादी जीवन की तुलना करके छात्रों को परिचित कराएँ ।

चाणक्य के चरित्र पर कक्षा में चर्चा करें ।

❖ ❖ ❖

कम्प्यूटर : एक अजूबा

(संकलित)

बीसवीं सदी को विज्ञान का युग कहा जाता है। लेकिन बीसवीं सदी का विज्ञान का युग इक्कीसवीं सदी में कम्प्यूटर युग में परिवर्तित हो गया है। आज हर कार्य कम्प्यूटर से किये जाने की बात की जाती है। वास्तव में विज्ञान का अब तक का सबसे श्रेष्ठ और उपयोगी आविष्कार कम्प्यूटर है।

प्रश्न किया जा सकता है कि कम्प्यूटर की आवश्यकता क्यों पड़ी ? वास्तव में मानव ने जब से सभ्य जीवन जीना शुरू किया और उसने गिनती की आवश्यकता का अनुभव किया, तभी से त्रुटि-रहित गिनती के साधनों की खोज शुरू हो गई। सबसे पहले आदमी ने हाथों की उँगलियों को गिना और गिनती का आधार रेखाओं (अंकों) को बनाया। इस प्रकार गिनती सीखने के बाद, कंकड़ों की सहायता से जोड़ने-घटाने की क्रिया को अपनाया। आज भी दूर-दराज के गाँवों के स्कूलों में मिट्टी की गोलियाँ बनाकर बच्चों को गिनना, जोड़ना-घटाना सिखाया जाता है। फिर नेपियर की छड़ें गिनने का साधन बनीं। अंत में गणना का सबसे शुद्ध और त्रुटि-रहित साधन कम्प्यूटर बना। आज मानव जीवन और उसका ज्ञान-विज्ञान इतना विस्तृत और जटिल बन गया है कि मनुष्य के द्वारा गणना किया जाना न केवल कठिन, बल्कि असंभव-सा हो गया है। इस असंभव को संभव बनाने के

लिए विज्ञान ने कम्प्यूटर या संगणक की रचना की । आज कम्प्यूटर मानव जाति के लिए वरदान सिद्ध हो रहा है । पहला कम्प्यूटर हावर्ड आइकेन ने १९१४ ई० में बनाया था ।

वैसे तो अचूक गणना के लिए कम्प्यूटर या संगणक का आविष्कार किया गया था, लेकिन आज का कम्प्यूटर इसके अतिरिक्त कई अन्य उलझे तथा मुश्किल काम भी कर सकता है । हम कम्प्यूटर को कुछ सूचनाएँ देते हैं और इसके साथ ही उस सूचना का क्या करना है, यह भी निर्देश देते हैं । कम्प्यूटर हमारे निर्देश के अनुसार हमारा काम आनन-फानन में कर देता है । इस प्रकार कम्प्यूटर विज्ञान द्वारा बनाया गया एक यांत्रिक मस्तिष्क है ।

कम्प्यूटर के मुख्य रूप से दो भाग होते हैं-एक हार्डवेयर और दूसरा सॉफ्टवेयर। हार्डवेयर इसका मशीनी भाग होता है । यह दिखलाई देता है, जबकि सॉफ्टवेयर दिखलाई नहीं देता है । उदाहरण के लिए जब हम उँगलियों पर गणना करते हैं तो उंगलियाँ 'हार्डवेयर' की तरह होती हैं और गिनने की क्रिया जो मस्तिक से होती है, सॉफ्टवेयर की तरह अदृश्य होती है । कम्प्यूटर मनुष्य का दास है, वह मनुष्य की आज्ञा का पूरा-पूरा पालन करता है । मालिक जिस कार्य को नहीं कर सकता, उसको उसका आज्ञा पालक कम्प्यूटर फटाफट कर देता है । कम्प्यूटर ने तो बडे-बडे मस्तिष्कों को मात दे दी है ।

आज कम्प्यूटर की सहायता से हवाई जहाज़ चलते हैं, गंभीर रोगों का इलाज कम्प्यूटर की सहायता से चलने तथा नियंत्रित होने वाली मशीनों से होता है । रेडियो, दूरदर्शन, समुद्रों में चलने वाले जहाज, उपग्रह, टेलीफोन आदि सब कम्प्यूटर के करिश्मे से ही संचालित हैं ।

अब ऐसे प्रोग्राम बन चुके हैं जिनकी सहायता से कम्प्यूटर हमारे रसोईघर पर भी अपना कब्ज़ा जमा सकता है । यह घर की सफाई, रंगाई, पुताई, आमदनी-खर्च का हिसाब-किताब आदि कार्य भी कर सकता है । वह दिन भी आ गया है कि कम्प्यूटर की सहायता से रिमोट कन्ट्रोल के द्वारा कारों तथा घरों के दरवाज़े खोले और बंद किये जा सकते हैं । और तो और, अब लोग अपने भाग्य के बारे में जानने के लिए ज्योतिषियों के पास न जाकर कम्प्यूटर के पास जाने लगे हैं । इस तरह कम्प्यूटर 'पंडितजी' भी बन गया है ।

अब तो कम्प्यूटर के खिलौने 'प्रोफेसर गणित' के रूप में तुम्हें गणित के सवालों को हल करके बताएँगे । कोई आश्चर्य नहीं कि कुछ ही दिनों में शिक्षकों का स्थान कम्प्यूटर ले लें । फिर जो हमें 'आचार्योदेवो भव' के स्थान पर 'कम्प्यूटर देवो भव' कहना पड़ेगा ! कम्प्यूटर ने चित्रकला के जगत में भी प्रवेश पा लिया है । एक-से-एक मनोरम रंग-बिरंगे चित्र कम्प्यूटर तैयार कर रहे हैं । आज के अधिकतर उत्पादों के डिजाइन कम्प्यूटर ही तैयार करते हैं । पुस्तकों के प्रकाशन में तो इसने क्रांति ही ला दी है- साफ-सुथरी आकर्षक रंगों वाली किताबें इसी की देन हैं ।

शब्दार्थ :

त्रुटि-रहित	-	गलती से मुक्त;
नियंत्रित	-	काबू में रखना;
वरदान	-	शुभ फल;
आश्चर्य	-	अचंभा, हैरत;
मस्तिष्क	-	दिमाग़;
आनन फानन में	-	तुरन्त;
गंभीर	-	गहरा, जटिल;
संगणक	-	गिनने वाला, हिसाब आदि रखने वाली मशीन, कम्प्यूटर;
विस्तृत	-	फैला हुआ

अनुशीलनी

समझो और लिखो:

१. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दो:

(i) पहला कम्प्यूटर किसने और कब बनाया था ?

(ii) कम्प्यूटर की आवश्यकता क्यों पड़ी ?

(iii) कम्प्यूटर के मुख्य रूप से कितने भाग होते हैं ? दोनों भागों का उदाहरण के साथ वर्णन करो ।

(iv) कम्प्यूटर की सहायता से हम क्या-क्या कर सकते है ?

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो:

(i) सबसे पहले आदमी ने हाथों की .... का गिना ।

(ii) गिनती सीखने के बाद .... की सहायता से जोड़ने-घटाने की क्रिया को अपनाया ।

(iii) हार्डवेयर इसका .... भाग होता है, यह .... देता है जबकि सॉफ्टवेयर .... नहीं देता ।

(iv) और तो और, अब लोग अपने भाग्य के बारे में जानने के लिए ज्योतिषियों के पास न जाकर .... के पास जाने लगे हैं ।

(v) अब तो कम्प्यूटर के खिलौने 'प्रोफेसर गणित' के रूप में तुम्हें .... के सवालों को .... करके बताएँगे

३. नीचे लिखे मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में उनका प्रयोग करो :

आनन-फानन में करना, मात देना, फटाफट करना, कब्जा जमाना ।

४. उदाहरण के अनुसार नीचे लिखे वाक्यों को बदलो:

उदाहरण-प्रश्न किया जाता है । (कर्म वाचक)

प्रश्न किया जा सकता है । (संभावना वाचक)

(क) बीसवीं सदी को विज्ञान का युग कहा जाता है ।

(ख) बच्चों को गिनना, जोड़ना, घटाना सिखाया जाता है ।

(ग) कम्प्यूटर से रंग-बिरंगे चित्र बनाये जाते हैं ।

(घ) कम्प्यूटर की सहायता से किताबों का प्रकाशन भी किया जाता है ।

५. **नीचे लिखे शब्दों के विशेषण, विशेष्य शब्द छाँटकर अलग-अलग लिखो :**

बीसवीं सदी, उपयोगी आविष्कार, सभ्य मानव,
अचूक गणना, आज्ञापालक सेवक, रंग-बिरंगे चित्र

विशेषण	**विशेष्य**
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

६. **पढ़ो, समझो और लिखो:**

(क) विलोम शब्द	(ख) पर्यायवाची शब्द
उपयोगी = अनुपयोगी	आदमी = मनुष्य
आवश्यकता =	दास =
संभव =	इलाज =
वरदान =	शिक्षक =
गरीबी =	कुशलता =

शिक्षकों से :

- सम्भव हो तो कम्प्यूटर को कक्षा में दिखाएँ, संभव न हो तो उसका बड़ा चित्र छात्रों को दिखाएँ ।
- भारत में कम्प्यूटर ज्ञान और आविष्कार के विषय में इस प्रकार बतलाएँ जिससे छात्रों में अपने देश के प्रति गौरव-भावना जागे ।
- कम्प्यूटर के गुणों के विषय पर कक्षा में चर्चा करें ।
- छात्रों से पूछें कि उन्हें कम्प्यूटर पर काम करने की अभिज्ञता है या नहीं - यदि है तो इस बारें में कक्षा को बताएँ ।

❖ ❖ ❖

मेरा बचपन

सुभद्राकुमारी चौहान

बार-बार आती है मुझको
मधुर याद, बचपन तेरी ।
गया, ले गया तू जीवन की
सबसे मस्त खुशी मेरी ।

चिंता रहित खेलना खाना
वह फिरना निर्भय स्वच्छंद ।
कैसे भुला जा सकता है
बचपन का अतुलित आनंद ।

किये दूध के कुल्ले मैंने
चूस अँगूठा सुधा पीया ।
किलकारी कल्लोल मचाकर
सूना घर आबाद किया ।

मैं रोई, माँ काम छोड़कर
आई, मुझको उठा लिया ।
झाड़-पोंछकर चुम-चुम
गीले गालों को सुखा दिया ।

आ जा बचपन ! एक बार फिर
दे दे अपनी निर्मल शांति ।
व्याकुल व्यथा मिटाने वाली
वह अपनी प्राकृतिक विश्रांति ।

मैं बचपन को बुला रही थी
बोल उठी बिटिया मेरी ।
नंदनवन-सी फूल उठी
यह छोटी-सी कुटिया मेरी ।

'माँओ' कहकर बुला रही थी
मिट्टी खाकर आई थी ।
कुछ मुँह में, कुछ लिए हाथ में
मुझे खिलाने आई थी ।

मैंने पूछा, "यह क्या लाई ?"
बोल उठी वह, "माँ काओ ।"
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से
मैंने कहा-तुम ही खाओ ।

पाया मैंने बचपन फिर से
बचपन बेटी बन आया ।
उसकी मंजुल मूर्ति देखकर
मुझमें नवजीवन आया ।

जिसे खोजती थी बरसों से
अब जाकर उसको पाया ।
भाग गया था, मुझे छोड़कर
वह बचपन फिर से आया ।

शब्दार्थ :

मस्त	-	लापरवाह;
निर्मल	-	स्वच्छ;
निर्भय	-	भय रहित;
व्याकुल	-	बेचैन;
स्वच्छन्द	-	स्वाधीन;
व्यथा	-	दुःख, परेशानी;
अतुलित	-	अपार, बेहिसाब;
प्राकृतिक	-	स्वाभाविक;
सुधा	-	अमृत;
विश्रान्ति	-	विश्राम, आराम;
कल्लोल	-	मौज, क्रीड़ा;
नन्दन वन	-	नंदन नाम के इंद्र देवता का वन, इंद्र का उद्यान;
किलकारी	-	अत्यंत हर्षित होकर निकलने वाली अस्पष्ट ध्वनि;
प्रफुल्लित	-	आनंदित;
आबाद करना	-	बसाना;
मंजुल	-	मनोहर

अनुशीलनी

१. सोचो और लिखो :

(i) कवयित्री को बार बार किसकी मधुर याद आती है ?

(ii) कवयित्री बचपन की किन किन बातों को भूल नहीं सकती ।

(iii) कवयित्री ने सूने धर को कैसे आबाद किया ?

(iv) बच्चे के रोने पर माँ क्या करती थी ?

(v) कवयित्री के जीवन में कौन बचपन बनकर आई ?

(vi) बच्चे के बुलाने पर माँ की छोटी-सी कुटिया कैसे भर उठी ?

(vii) कवयित्री अपने बचपन को कैसे फिर से प्राप्त करती है ?

२. एक शब्द में उत्तर दो : -

(i) बार बार मधुर याद किसको आती है ?

(ii) किसका अतुलित आनंद भुला नहीं जा सकता ?

(iii) मैं रोई तो कौन काम छोड़कर आई ?

(iv) कवयित्री बचपन से किस प्रकार की शांति माँगती है ?

(v) बचपन क्या बनकर आता है ?

३. निम्नलिखित पंक्तियाँ पूरी करो :

(I) कैसे भुला जा सकता है

.... ।

(ii) किलकारी कल्लोल मचाकर

.... ।

(iii) झाड़-पोंछ कर चुम-चुम कर

.... ।

(iv) नन्दन बन- फूल उठी

.... ।

(v) उसकी मंजुल मूर्ति देखकर

.... ।

४. निम्नलिखित में से विशेषण शब्दों को छाँट कर लिखो:

मधुर याद = मधुर

मस्त खुशी = ...

अतुलित आनंद =..................

सूना घर =..................

गीले गाल =..................

प्राकृतिक विश्रांति =..................

प्रफुल्लित हृदय =..................

मंजुल मूर्ति =..................

५. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखो :

मंजुल = सुन्दर, मनोहर

सुधा =

आनंद =

व्यथा =

कुटिया =

❖ ❖ ❖

डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(संकलित)

अंग्रेजी में एक कहावत है-

कुछ व्यक्ति जन्मजात महान होते हैं, कुछ महानता प्राप्त कर लेते हैं और कुछ पर महानता लाद दी जाती है ।

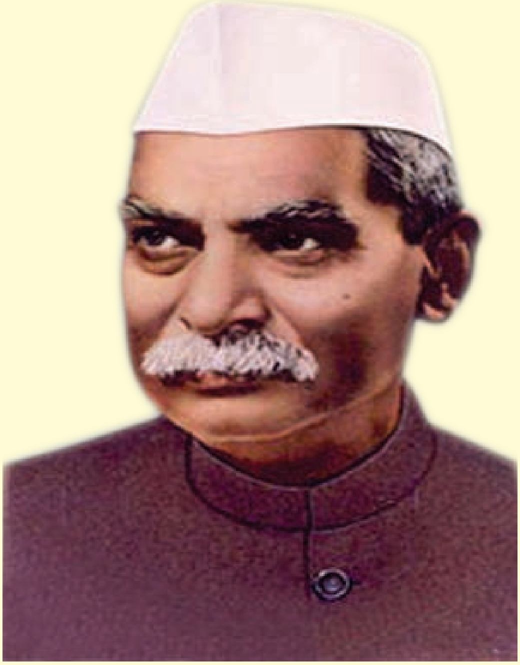

यदि हम इस उक्ति को आधार मानकर राजेंद्र बाबू का विश्लेषण करें तो पता चलता है कि राजेंद्र बाबू उन व्यक्तियों में से नहीं थे जो किसी धनी परिवार में जन्म लेकर अपने को महान साबित करने की कोशिश करते थे । और न ही महानता उन्हें विरासत में तोहफे के रूप में मिली । वास्तव में यह उनके महान गुणों का ही प्रभाव है जो उन्हें पारिवारिक और सार्वजनिक जीवन में सफलता प्रदान कर महान घोषित करता है ।

अपने शील, स्वभाव, सामान्य वेशभूषा, बौद्धिक प्रखरता, सरलता, नैतिकता, सहज गंभीरता के कारण ही राजेंद्र बाबू को स्वतंत्र भारत का प्रथम राष्ट्रपति चुना गया । वह जो कुछ कहते थे, उसे अपने वास्तविक जीवन में अपनाते भी थे । उनके इसी विशिष्ट गुण से जुड़ी एक घटना तब की है, जब राजेंद्र बाबू राष्ट्रपतित्व के बाद अपने शेष जीवन को सर्वोदय मार्ग पर राष्ट्र एवं संपूर्ण मानवता की

सेवा में बिताने का संकल्प करते हुए सदाकत आश्रम में रहते थे । वहाँ वह बच्चों को पढ़ाने व उन्हें नैतिक शिक्षा का ज्ञान देने का कार्य करते थे । एक बार राजेंद्र बाबू बच्चों को परिश्रम के महत्व के विषय में बता रहे थे- प्रत्येक व्यक्ति को श्रम करके अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहिए और श्रम के बाद जिस फल की प्राप्ति होती है, उस पर सबसे पहले परिश्रम करने वाले व्यक्ति का अधिकार है । जैसे बगीचे में फल लगाने वाले को अपनी पसंद के अनुसार चुनकर फल खाने का अधिकार होना चाहिए । यदि कोई उस व्यक्ति का यह अधिकार छीनता है तो वह शोषण करने वाला, निर्दयी होगा ।

सभी बच्चे बाबू जी की इस बात को बहुत ध्यान से सुनकर उसे समझ रहे थे, क्योंकि वे बाबू जी के प्रति श्रद्धा और विश्वास रखते थे । लेकिन इन बच्चों में एक ऐसा बच्चा भी था जो उस आश्रम में नया आया था । उसे लग रहा था बाबू जी की यह बात केवल एक उपदेश मात्र है । वास्तविक जीवन में कोई भी इस उपदेश का स्वयं पालन नहीं करता होगा । उसके मन में वह विचार आया कि, क्यों न बाबू जी को परखा जाए । देखें, वह वास्तव में स्वयं श्रम करने वाले व्यक्ति को उसका अधिकार देते हैं या नहीं ।

बाबू जी प्रतिदिन स्नान से पहले नीम की दातुन करते थे । इसलिए कोई भी उनके लिए दातुन तोड़ लाता था । अगले दिन वह बालक बाबू जी के लिए दो दातुन लेकर पहुँचा । उसमें से एक साफ सुथरी थी, दुसरी सख्त उबड़-खाबड़ थी । उसने दातुन बाबू जी के सामने करते हुए कहा ''दातुन ले लीजिए'' । राजेंद्र बाबू ने बालक की ओर देखा ।

वह बालक साफ दातुन को बाबू जी को देता हुआ बोला - ‘‘आप इसको ले लीजिए । दूसरे का मैं प्रयोग कर लूँगा क्योंकि यह ज्यादा ठीक नहीं है ।’’ बाबू जी ने तुरंत साफ दातुन बालक को देते हुए कहा कि नहीं तुमने मेहनत की है और अच्छी दातुन पर पहला अधिकार तुम्हारा है ।

बालक को बहुत हैरानी हुई । उसने बाबू जी की ओर ध्यान से देखा और अचानक वह रोने लगा । बाबू जी उसे रोते देखकर हैरान हुए । वे समझे नहीं कि ऐसा क्या हो गया जो बालक रोने लगा । उन्होंने उस बालक को शांत करके जब कारण पूछा तो वह बाबू जी के चरणों में बैठते हुए बोला - ‘‘मुझे माफ कर दीजिए । मैंने आज बहुत बड़ी गलती की है जो आपको सामान्य व्यक्ति समझा । वास्तव में आप तो देवतुल्य हैं, आप जो कहते हैं उसका स्वयं भी पूरा पालन करते हैं ।’’ उसने रोते हुए सारी बात बाबू जी को बता दी । यह सब जानकर बाबू जी हँसे और बोले- ‘‘इस बात से तुम रो रहे हो । वास्तव में इससे तुम्हारे बुद्धिमान और तर्कशील होने का पता चलता है । देखो, हमारी कही बात दूसरे पर तभी प्रभाव डालती है जब हम स्वयं उस बात का अपने जीवन में पालन करते हैं । यदि तुम यह देखते कि मैं जो तुम लोगों से कहता हूँ उसका पालन स्वयं नहीं करता, तो कोई भी बच्चा मेरी बात को नहीं सुनता । मुझे खुशी है कि मैं तुम्हारी परीक्षा में खरा उतरा ।’’

बाबू जी की इन बातों को सुनकर वह बालक बहुत प्रभावित हुआ और उनके चरणो में झुक गया ।

शब्दार्थ :

बौद्धिक प्रखरता	-	बुद्धि तेज होना;
विशिष्ट	-	विशेष, खास;
देवतुल्य	-	देवता के समान;
विश्लेषण	-	तथ्यों के आधार पर किसी बात को अलग करना;
विरासत	-	पूर्वजों से प्राप्त

अनुशीलनी

१. समझो और लिखो :

(I) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति पद से अवकाश लेने के बाद कहाँ रहने लगे ?

(ii) आश्रम में बाबूजी क्या करते थे ?

(iii) राजेन्द्र बाबू ने बच्चों को आश्रम के बारे में क्या बताया ?

(iv) नये बच्चे ने बाबूजी को परखने के लिए क्या किया ?

(v) बालक की इस हालत पर बाबूजी ने उसे क्या कहा ?

(vi) स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे ?

(vii) राष्ट्रपति पद से अवकाश लेने के बाद राजेन्द्र बाबू ने क्या संकल्प किया ?

भाषावोध : -

२. रेखांकित शब्दों का विलोम शब्द लिखकर वाक्यों को फिर से लिखो :

(I) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद को परतंत्र भारत का राष्ट्रपति बनाया गया ।

(ii) धनी परिवार में जन्म लेने से ही कोई महान नहीं बन जाता ।

(iii) मेहनत का फल छीनने वाला निर्दयी होता है।

(iv) दूसरा दातुन <u>सख्त</u> था ।

(v) वास्तव में तुम <u>बुद्धिमान हो</u> ।

३. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताओ और उनके प्रयोग से वाक्य बनाओ :-

खुशी -

स्वभाव -

पसंद -

मेहनत -

संकल्प -

४. निम्नलिखित शब्दों के संज्ञा-रूप लिखो :-

पारिवारिक - ....

सार्वजनिक - ....

बुद्धिमान - ....

सरल - ....

५. निम्नलिखित शब्दों की मात्रा ठीक करके लिखो :-

लिजिए - .... नहिं - ....

इसलीए - .... हेरानी - ....

जिवन - .... नेतिक - ....

बाबु - .... क्योंकी - ....

पत्रलेखन

१. अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को एक दिन की छुट्टी के लिए आवेदन पत्र लिखिए :

सेवा में,

श्रीयुत प्रधानाचार्य जी,

रेवेन्शा कॉलजिएट स्कूल, कटक

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं पिछली रात से ज्वर से पीड़ित हूँ । इसलिए मैं आज विद्यालय में उपस्थित न हो सकूँगा । आपसे प्रार्थना है कि कृपया एक दिन की छुट्टी प्रदान करके मुझे कृतार्थ करें ।

दिनांक-

आपका आज्ञाकारी छात्र,
राम गोपाल सिंह
पंचम कक्षा

२. अपने मोहल्ले की सफाई के लिए नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखो :

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी,

महानगर निगम, भुवनेश्वर

महोदय,

निवेदन है कि सत्यनगर में सफाई का समुचित प्रबंध नहीं है । नगर के कई भागों में मलेरिया का प्रकोप बढ़ रहा है । हमारे क्षेत्र में सड़कों पर गंदे कूड़े की ढेरियाँ पड़ी हुई हैं जो मच्छरों को जन्म देती हैं । कृपया आप तुरंत इस इलाके के निरीक्षक को भेजें, जिससे कि मोहल्ले की सफाई हो सके । इस इलाके के निवासी आपको अपनी ओर से पूरा सहयोग देने का आश्वासन देते हैं ।

भवदीय,

दिनांक - १९.७.२०११

अमरेन्द्र प्रधान

१०/३०, सत्य नगर

भुवनेश्वर

३. अपने मित्र को अपनी बहन की शादी में सम्मिलिन होने का निमत्रण-पत्र लिखो:

पत्र मित्र को (व्यक्तिगत पत्र)

१५, चित्रकूट सदन

ब्रह्मपुर, ओड़िशा

दिनांक-१९.७.२०११

प्रिय मित्र,

सप्रेम नमस्कार,

तुम्हें यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि मेरी बहन अमृता का शुभ विवाह राउरकेला निवासी श्री राजेन्द्र मिश्र की पुत्री से दिनांक ५ अक्टूबर सन् २०११ को

होना निश्चित हुआ है । इस शुभ अवसर पर मैं तुम्हें सप्रेम आमंत्रित करते हुए आशा करता हूँ कि तुम इस मांगलिक कार्य में अवश्य भाग लोगे । विश्वास है कि तुम मुझे निराश नहीं करोगे ।

तुम्हारा मित्र,
अविनाश मिश्र

अभ्यास

१. आपको किसी पुस्तक प्रकाशक से कुछ पुस्तकें मँगानी हैं । इसके लिए एक आदेश पत्र लिखो ।

कटक

दिनांक................

सेवा में,

व्यवस्थापक

....

....

....

प्रिय महोदय,

निम्न पुस्तकें वी.पी.द्वारा ....

....

....

१. हिन्दी भारती भाग - ०१ - १ प्रति

२. हिन्दी भारती भाग - ०२ - १ प्रति

पुस्तकों का बिल उचित कमीशन काटकर बनाएँ, पुरानी अथवा गलत किताबें लौटा दी जायेंगी, जिनके व्यय की जिम्मेदारी आप पर ही होगी ।

आपका

भवतोष गुप्ता

....

....

२. मान लो कि आप भुवनेश्वर, जयदेव विहार, मोहल्ला नं ३० में रहते हैं । आपके नाना दिल्ली में दरियागंज पर २०५ नं मकान में रहते हैं । अपने नाना को दशहरे के अवसर पर भुवनेश्वर आने के लिए एक पत्र लिखो:

नाना जी को पत्र

दिनांक..........

....

पूज्यवर,

....

....

....

....

....

....

....

....

....

आपका,

....

....

....

पता

टिकट

प्रेषक,

....

....

....

....

सेवा में,

....

....

....

....

मनभावन सावन

सुमित्रानंदन पंत

झम-झम-झम-झम मेघ बरसते हैं सावन के,
छम-छम-छम गिरती बूँदे तरुओं से छन के ।
चम-चम बिजली चमक रही रे उर में घन के,
थम-थम दिन के तम में सपने जगते मन के ॥

पंखों-से रे, फैले-फैले ताड़ों के दल,
लंबी-लंबी उँगलियाँ हैं, चौड़े करतल ।
तड़-तड़ पड़ती धार वारि की उन पर चंचल,
टप-टप झरतीं कर मुख से जल बूँदें झलमल ॥

नाच रहे पागल हो ताली दे-दे चल-चल,
झूम-झूम सिर नीम हिलाती सुख से विह्वल ।
हरसिंगार झरते बेला-कली बढ़ती प्रतिपल,
हँसमुख हरियाली में खग-कुल गाते मंगल ॥

दादुर टर-टर करते झिल्ली बजती झन-झन,
'म्याव-म्याव' रे मोर 'पीउ-पीउ' चातक के गण ।
उड़ते सोन बालक, आर्द्र सुख से कर क्रंदन,
घुमड़-घुमड़ घिर मेघ गगन में करते गर्जन ॥

रिमझिम-रिमझिम क्या कुछ कहते बूँदों के स्वर,
रोम सिहर उठते, छूते वे भीतर अंतर ।
धाराओं पर धाराएँ झरतीं धरती पर,
रज के कण-कण में तृण-तृण की पुलकावलि भर ।।

पकड़ वारि की धार झूलता है मेरा मन,
आओ रे सब मुझे घेरकर गाओ सावन ।
इंद्रधनुष के झूले में झूलें मिल सब जन,
फिर-फिर आए जीवन में सावन मनभावन ।।

शब्दार्थ :

मेघ	-	बादल
तरु	-	पेड़
उर	-	हृदय
घन	-	बादल
वारि	-	जल, पानी
रज	-	मिट्टी

अनुशीलनी

१. समझो और लिखो :

(i) प्रस्तुत कविता के कवि कौन हैं ?

(ii) पेड़ कैसे लगते हैं ? वर्षा का उन पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

(iii) सावन की वर्षा का पक्षियों पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

(iv) कवि का मन क्या चाहता है ?

(v) 'इन्द्र-धनुष के झूले में झूलें मिल सब जन''- पंक्ति का क्या अभिप्राय है ?

२. पठित कविता की पंक्तियों को याद करो और लिखो :

निम्नलिखित शब्दों को पढ़ो :

झम - झम

चम - चम

थम - थम

तड़ - तड़

टर - टर

झूम - झूम

घुमड़ - घुमड़

३. पठित कविता के आधार पर एक चित्र बनाओ ।

❖ ❖ ❖

बड़े भाई साहब

प्रेमचंद

मेरे भाई साहब मुझसे पाँच साल बड़े थे; लेकिन तीन दरजे आगे। उन्होंने भी उसी उम्र में पढ़ना शुरू किया था जब मैंने शुरू किया; लेकिन तालीम जैसे महत्व के मामले में वह जल्दबाजी से काम लेना पसंद न करते थे। इस भवन की बुनियाद खूब मजबूत डालनी चाहते थे, जिस पर आलीशान महल बन सके। एक साल का काम दो साल में करते थे। कभी-कभी तीन साल भी लग जाते थे। बुनियाद ही पुख्ता न हो, तो मकान कैसे पाएदार बने !

मैं छोटा था, वह बड़े थे। मेरी उम्र नौ साल की थी, वह चौदह साल के थे। उन्हें मेरी तम्बीह और निगरानी का पूरा और जन्मसिद्ध अधिकार था। और मेरी शालीनता इसी में थी कि उनके हुक्म को कानून समझूँ।

वह स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे। हरदम किताब खोले बैठे रहते। और शायद दिमाग को आराम देने के लिए कभी कापी पर, कभी किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे। कभी-कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस-बीस बार लिख डालते। कभी एक शेर को बार-बार सुंदर अक्षरों में नकल करते। कभी शब्द-रचना करते, जिसमें न कोई अर्थ होता, न कोई सामंजस्य। मसलन एक बार उनकी कापी पर मैंने यह इबारत देखी-स्पेशल, अभी ना, भाइयों-भाइयों, दरअसल, भाई-भाई, राधेश्याम-श्रीयुक्त राधेश्याम, एक घंटे तक-इसके बाद एक आदमी का चेहरा बना हुआ था। मैंने बहुत चेष्टा की कि इस पहेली का कोई अर्थ निकालूँ, लेकिन असफल रहा। और उनसे पूछने का साहस न

हुआ । वह नवीं जमात में थे, मैं पाँचवीं में । उनकी रचनाओं को समझना मेरे लिए छोटा मुँह बड़ी बात थी ।

मेरा जी पढ़ने में बिलकुल न लगता था । एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ था । मौका पाते ही होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता, और कभी कंकरियाँ उछालता, कभी कागज की तितिलियाँ उड़ाता, और कहीं कोई साथी मिल गया, तो पूछना ही क्या । कभी चारदीवारी पर चढ़कर नीचे कूद रहे हैं, कभी फाटक पर सवार, उसे आगे-पीछे चलाते हुए मोटरकार का आनंद उठा रहे हैं, लेकिन कमरे में आते ही भाई साहब का वह रुद्र-रूप देखकर प्राण सूख जाते ! उनका पहला सवाल यह होता- 'कहाँ थे ?' 'हमेशा यही सवाल, इसी ध्वनि में हमेशा पूछा जाता था और इसका जवाब मेरे पास केवल मौन था । न जाने मेरे मुँह से यह बात क्यों न निकलती कि जरा बाहर खेल रहा था । मेरा मौन कह देता था कि मुझे अपना अपराध स्वीकार है और भाई साहब के लिए इसके सिवा और कोई इलाज न था कि स्नेह और रोष से मिले हुए शब्दों में मेरा सत्कार करें ।

'इस तरह अंग्रेजी पढ़ोगे, तो जिंदगी-भर पढ़ते रहोगे और हर्फ न आएगा । अंग्रेजी पढ़ना कोई हँसी-खेल नहीं है कि जो चाहे, पढ़ ले; नहीं तो ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा सभी अंग्रेजी के विद्वान हो जाते । यहाँ रात-दिन आँखें फोड़नी पड़ती है और खून जलाना पड़ता है, तब कहीं यह विद्या आती है । और आती क्या है, हाँ कहने को आ जाती है । बड़े-बड़े विद्वान भी शुद्ध अंग्रेजी नहीं लिख सकते, बोलना तो दूर रहा । और मैं कहता हूँ, तुम कितने घोंघा हो कि मुझे देखकर भी सबक नहीं लेते । मैं कितनी मेहनत करता हूँ, यह तुम अपनी आँखों से देखते हो, अगर नहीं देखते, तो यह तुम्हारी आँखों का कसूर है, तुम्हारी बुद्धि का कसूर है । इतने मेले-तमाशे होते

हैं, मुझे तुमने कभी देखने जाते देखा है ? रोज ही क्रिकेट और हॉकी-मैच होते हैं। मैं पास नहीं फटकता। हमेशा पढ़ता रहता हूँ। उस पर भी एक-एक दरजे में दो-दो, तीन-तीन साल पड़ा रहता हूँ, फिर भी तुम कैसे आशा करते हो कि तुम यों खेल-कूद में वक्त गँवाकर पास हो जाओगे ? मुझे तो दो ही तीन साल लगते हैं, तुम उम्र-भर इसी दरजे में पड़े सड़ते रहोगे। अगर तुम्हें इस तरह उम्र गँवानी है तो बेहतर है; घर चले जाओ और मजे से गुल्ली-डंडा खेलो। दादा की गाढ़ी कमाई के रुपए क्यों बरबाद करते हो ?'

मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता। जवाब ही क्या था। अपराध तो मैंने किया, लताड़ कौन सहे ? भाई साहब उपदेश की कला में निपुण थे। 'ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते, ऐसे-ऐसे सूक्ति-बाण चलाते, कि मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते और हिम्मत टूट जाती। इस तरह जान तोड़कर मेहनत करने की शक्ति मैं अपने में न पाता था और उस निराशा में जरा देर के लिए मैं सोचने लगता- क्यों न घर चला जाऊँ। जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमें हाथ डालकर क्यों अपनी जिंदगी खराब करूँ। मुझे अपना मूर्ख रहना मंजूर था, लेकिन उतनी मेहनत ! मुझे तो चक्कर आ जाता था; लेकिन घंटे-दो घंटे के बाद निराशा के बादल फट जाते और मैं इरादा करता कि आगे से खूब जी लगाकर पढ़ूँगा। चटपट एक टाइम-टेबिल बना डालता। बिना पहले से नक्शा बनाए, कोई स्कीम तैयार किए काम कैसे शुरू करूँ। टाइम-टेबिल में खेल-कूद की मद बिल्कुल उड़ जाती। प्रातःकाल उठना; छह बजे मुँह-हाथ धो, नाश्ता कर, पढ़ने बैठ जाना। छह से आठ तक अंग्रेजी, आठ से नौ तक हिसाब, नौ से साढ़े नौ तक इतिहास, फिर भोजन और स्कूल। साढ़े तिन बजे स्कूल से वापस होकर आधा घंटा आराम, चार से पाँच तक भूगोल, पाँच से छह

तक ग्रामर; आधा घंटा होस्टल के सामने ही टहलना, साढ़े छह से सात तक अंग्रेजी कंपोजिशन, फिर भोजन करके आठ से नौ तक अनुवाद, नौ से दस तक हिंदी, दस से ग्यारह तक विविध-विषय, फिर विश्राम ।

मगर टाइम-टेबिल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात । पहले ही दिन उसकी अवहेलना शुरू हो जाती । मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के हल्के-हल्के झोंके, फुटबाल की वह उछलकूद, कबड्डी के वह दाँव-घात, वॉलीबाल की वह तेजी और फुरती, मुझे अज्ञा और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती और वहाँ जाते ही मैं सबकुछ भूल जाता । वह जानलेवा टाइम-टेबिल, वह आँखफोड़ पुस्तकें, किसी की याद न रहती, और भाई साहब को नसीहत और फजीहत का अवसर मिल जाता । मैं उनके साए से भागता, उनकी आँखों से दूर रहने की चेष्टा करता, कमरे में इस तरह दबे पाँव आता कि उन्हें खबर न हो । उनकी नजर मेरी ओर उठी और मेरे प्राण निकले । हमेशा सिर पर एक नंगी तलवार-सी लटकती मालूम होती । फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता ।

२

सालाना इम्तहान हुआ । भाई साहब फेल हो गए, मैं पास हो गया और दरजे में प्रथम आया । मेरे और उनके बीच में केवल दो साल का अंतर रहा गया । जी में आया, भाई साहब को आड़े हाथों लूँ- आपकी वह घोर तपस्या कहाँ गई ? मुझे देखिए, मजे से खेलता भी रहा और दरजे में अव्वल भी हूँ । लेकिन वह इतने दुखी और उदास थे कि मुझे उनसे दिली हमदर्दी हुई और उनके घाव पर नमक छिड़कने का

विचार ही लज्जास्पद जान पड़ा । हाँ, अब मुझे अपने ऊपर कुछ अभिमान हुआ और आत्मसम्मान भी बढ़ा । भाई साहब का वह रोब मुझ पर न रहा । आजादी से खेलकूद में शरीक होने लगा । दिल मजबूत था । अगर उन्होंने फिर फजीहत की, तो साफ कह दूँगा- आपने अपना खून जलाकर कौन-सा तीर मार लिया । मैं तो खेलते-कूदते दरजे में अव्वल आ गया । जुबान से यह हेकड़ी जताने का साहस न होने पर भी मेरे रंग-ढंग से साफ जाहिर होता था कि भाई साहब का वह आतंक मुझ पर नहीं था । भाई साहब ने इसे भाँप लिया- उनकी सहज-बुद्धि बड़ी तीव्र थी और एक दिन जब मैं भोर का सारा समय गुल्ली-डंडे को भेंट करके ठीक भोजन के समय लौटा तो भाई साहब ने मानो तलवार खींच ली और मुझ पर टूट पड़े- देखता हूँ, इस साल पास हो गए और दरजे में अव्वल आ गए, तो तुम्हें दिमाग हो गया है; मगर भाईजान, घमंड तो बड़े-बड़े का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती है ? इतिहास में रावण का हाल तो पढ़ा ही होगा । उसके चरित्र से तुमने कौन-सा उपदेश लिया ? या यों ही पढ़ गए ? महज इम्तहान पास कर लेना कोई चीज नहीं, असल चीज है बुद्धि का विकास । जो कुछ पढ़ो, उसका अभिप्राय समझो । रावण भूमंडल का स्वामी था । ऐसे राजाओं को चक्रवर्ती कहते हैं । आजकल अंग्रेजों के राज्य का विस्तार बहुत बढ़ा हुआ है; पर इन्हें चक्रवर्ती नहीं कह सकते । संसार में अनेकों राष्ट्र अंग्रेजों का आधिपत्य स्वीकार नहीं करते, बिलकुल स्वाधीन हैं । रावण चक्रवर्ती राजा था, संसार के सभी महीप उसे कर देते थे । बड़े-बड़े देवता उसकी गुलामी करते थे । काम और पानी के देवता भी उसके दास थे । मगर उसका अंत क्या हुआ ? घमंड ने उसका नामोनिशान तक मिटा दिया, कोई उसे एक चुल्लू पानी देनेवाला भी न बचा। आदमी और जो कुकर्म चाहे करे; पर अभिमान न करे, इतराए नहीं ।

अभिमान किया, और दीन-दुनियाँ दोनों से गया। शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा। उसे यह अभिमान हुआ था कि ईश्वर का उससे बढ़कर सच्चा भक्त कोई है ही नहीं! अंत में यह हुआ कि स्वर्ग से नरक में ढकेल दिया गया। शाहेरूम ने भी एक बार अहंकार किया था। भीख माँग-माँगकर मर गया। तुमने तो अभी केवल एक दरजा पास किया है, और अभी से तुम्हारा सिर फिर गया, तब तो तुम आगे पढ़ चुके। यह समझ लो कि तुम अपनी मेहनत से नहीं पास हुए, अंधे के हाथ बटेर लग गई। मगर बटेर केवल एक बार हाथ लग सकती है, बार-बार नहीं लग सकती। कभी-कभी गुल्ली-डंडे से भी अंधा-चोट निशाना पड़ जाता है। इससे कोई सफल खिलाड़ी नहीं हो जाता। सफल खिलाड़ी वह है, जिसका कोई निशाना खाली न जाए। मेरे फेल होने पर मत जाओ। मेरे दरजे में आओगे, तो दाँतों पसीना आ जाएगा, जब अलजबरा और जोमेट्री के लोहे के चने चबाने पड़ेंगे, और इंलिस्तान का इतिहास पढ़ना पड़ेगा। बादशाहों के नाम याद रखना आसान नहीं। आठ-आठ हेनरी हो गुजरे हैं। कौन-सा कांड किस हेनरी के समय में हुआ, क्या यह याद कर लेना आसान समझते हो? हेनरी सातवें की जगह आठवाँ लिखा और सब नंबर गायब! सफाचट। सिफर भी ना मिलेगा, सिफर भी! हो किस खयाल में। दरजनों तो जेम्स हुए हैं, दरजनों विलियम, कोड़ियों चार्ल्स! दिमाग चक्कर खाने लगता है। आँधी रोग हो जाता है। इन अभागों को नाम भी न जुड़ते थे। एक ही नाम के पीछे दोयम, चहारुम, पंचुम लगाते चले गए। मुझसे पूछते, तो दस लाख नाम बता देता और जोमेट्री तो बस खुदा की पनाह! अ ब ज की जगह अ ज ब लिख दिया और सारे नंबर कट गए। कोई इन निर्दयी मुमतहिनों से नहीं पूछता कि आखिर अ ब ज और अ ज ब में क्या फर्क है, और व्यर्थ की बात के लिए क्यों छात्रों का खून करते हो।

दाल-भात-रोटी खाई या भात-दाल रोटी खाई, इसमें क्या रखा है, मगर इन परीक्षकों को क्या परवाह। वह तो वही देखते हैं जो पुस्तक में लिखा है। चाहते हैं कि लड़के अक्षर-अक्षर रट डालें। और इसी रटंत का नाम शिक्षा रख छोड़ा है। और आखिर इन बे-सिर-पैर की बातों के पढ़ने से फायदा ? इस रेखा पर वह लंब गिरा दो, तो आधार लंब से दुगुना होगा। पूछिए, इससे प्रयोजन ? दुगुना नहीं, चौगुना हो जाए, या आधा ही रहे, मेरी बला से; लेकिन परीक्षा में पास होना है, तो यह सब खुराफात याद करनी पड़ेगी ! कह दिया- 'समय की पाबंदी' पर एक निबंध लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो। अब आप कापी सामने खोले, कलम हाथ में लिये उसके नाम को रोइए। कौन नहीं जानता कि समय की पाबंदी बहुत अच्छी बात है, इससे आदमी के जीवन में संयम आ जाता है, दूसरों का उस पर स्नेह होने लगता है और उसके कारोबार में उन्नति होती है; लोकिन इस जरा-सी बात पर चार पन्ने कैसे लिखें। जो बात एक एक वाक्य में कही जा सके, उसे चार पन्नों में लिखने की जरूरत ? मैं तो इसे हिमाकत कहता हूँ। यह तो समय की किफायत नहीं; बल्कि उसका दुरुपयोग है कि व्यर्थ में किसी बात को ठूँस दिया जाए। हम चाहते हैं, आदमी को जो कुछ कहना हो, चटपट कह दे, अपनी राह ले। मगर नहीं, आपको चार पन्ने रंगने पड़ेंगे; चाहे जैसे लिखिए। और पन्ने भी पूरे फुलस्केप के आकार के। यह छात्रों पर अत्याचार नहीं तो और क्या है ? अनर्थ तो यह है कि कहा जाता है, संक्षेप में लिखो। समय की पाबंदी पर संक्षेप में एक निबंध लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो। ठीक ! संक्षेप में तो चार पन्ने हुए नहीं शायद सौ-दो सौ पन्ने लिखवाते। तेज भी दौड़िए और धीरे-धीरे भी है। उलटी बात है या नहीं ? बालक भी इतनी-सी-बात समझ सकता है; लेकिन इन अध्यापकों को इतनी तमीज भी नहीं। उस पर

दावा है कि हम अध्यापक हैं। मेरे दरजे में आओगे लाला, तो ये सारे पापड़ बेलने पड़ेंगे और तब आटे-दाल का भाव मालूम होगा। इस दरजे में अव्वल आ गए हो, तो जमीन पर पाँव नहीं रखते। इसलिए मेरा कहना मानिए। लाख फेल हो गया हूँ, लेकिन तुमसे बड़ा हूँ, संसार का मुझे तुमसे कहीं ज्यादा अनुभव है। जो कुछ कहता हूँ, उसे गिरह बाँधिए, नहीं पछताइएगा।

स्कूल का समय निकट था, नहीं ईश्वर जाने यह उपदेश-माला कब समाप्त होती। भोजन आज मुझे निः स्वाद-सा लग रहा था। जब पास होने पर यह तिरस्कार हो रहा है, तो फेल हो जाने पर तो शायद प्राण ही ले लिए जाएँ। भाई साहब ने अपने दरजे की पढ़ाई का जो भयंकर चित्र खींचा था; उसने मुझे भयभीत कर दिया। स्कूल छोड़कर घर नहीं भागा, यही ताज्जुब है; लेकिन इतने तिरस्कार पर भी पुस्तकों में मेरी अरुचि ज्यों-की-त्यों बनी रही। खेल-कूद का कोई अवसर हाथ से न जाने देता। पढ़ता भी; मगर बहुत कम, बस इतना कि रोज का टास्क पूरा हो जाए और दरजे में जलील न होना पड़े। अपने ऊपर जो विश्वास पैदा हुआ था, वह फिर लुप्त हो गया और फिर चोरों का-सा जीवन कटने लगा।

३

फिर सालाना इम्तहान हुआ, और कुछ ऐसा संयोग हुआ कि मैं फिर पास हुआ और भाई साहब फेल हो गए। मैंने बहुत मेहनत नहीं की; पर न जाने कैसे दरजे में अव्वल आ गया। मुझे खुद अचरज हुआ। भाई साहव ने प्राणांतक परिश्रम किया था। कोर्स का एक-एक शब्द चाट गए थे, दस बजे रात तक इधर, चार बजे भोर से उधर, छह से साढ़े नौ तक स्कूल जाने के पहले। मुद्रा कांतिहीन हो गई थी; मगर बेचारे फेल हो गए। मुझे उन पर दया आती थी! नतीजा सुनाया गया, तो वह रो पड़े

और मैं भी रोने लगा। अपने पास होने की खुशी आधी हो गई! मैं भी फेल हो गया होता, तो भाई साहब को इतना दुख न होता, लेकिन विधि की बात कौन टाले।

मेरे और भाई साहब के बीच में अब केवल एक दरजे का अंतर और रह गया। मेरे मन में एक कुटिल भावना उदय हुई कि कहीं भाई साहब एक साल और फेल हो जाएँ तो मैं उनके बराबर हो जाऊँ, फिर वह किस आधार पर मेरी फजीहत कर सकेंगे, लेकिन मैंने इस कमीने विचार को दिल से बलपूर्वक निकाल डाला। अखिर वह मुझे मेरे हित के विचार से ही तो डाँटते हैं। मुझे इस वक्त अप्रिय लगता है अवश्य, मगर यह शायद उनके उपदेशों का ही असर हो कि मैं दनादन पास हो जाता हूँ और इतने अच्छे नंबरों से।

अब भाई साहब बहुत कुछ नर्म पड़ गए थे। कई बार मुझे डाँटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया। शायद अब वह खुद समझने लगे थे कि मुझे डाँटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा, या रहा भी, तो बहुत कम। मेरी स्वच्छंदता भी बढ़ी। मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा। मुझे कुछ ऐसी धारण हुई कि मैं पास ही हो जाऊँगा, पढ़ूँ या न पढ़ूँ, मेरी तकदीर बलवान है; इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा-बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हुआ। मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाजी को ही भेंट होता था; फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था, और उनकी नजर बचाकर कनकौए उड़ाता था। माँझा देना, कने बाँधना, पतंग टुरनामेंट की तैयारियाँ आदि समस्याएँ सब गुप्त रूप से हल की जाती थीं। मैं भाई साहब को यह संदेह न करने देना चाहता था कि उनका सम्मान और लिहाज मेरी नजरों में कम हो गया है।

एक दिन संध्या-समय, होस्टल से दूर मैं एक कनकौआ लूटने बेतहाशा दौड़ा जा रहा था। आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन में नए संस्कार ग्रहण करने आ रही हो। बालकों की पूरी सेना लग्गे और झड़दार बाँस लिए इनका स्वागत करने को दौड़ी आ रही थी। किसी को उपने आगे-पीछे की खबर न थी। सभी मानो उस पतंग के साथ ही आकाश में उड़ रहे थे, जहाँ सब कुछ समतल है, न मोटरकारें हैं, ट्राम, न गाड़ियाँ।

सहसा भाई साहब से मेरी मुठभेड़ हो गई, जो शायद बाजार से लौट रहे थे। उन्होंने वहीं हाथ पकड़ लिया और उग्र भाव से बोले-इन बाजारी लौंडों के साथ धेले के कनकौए के लिए दौड़ते तुम्हें शर्म नहीं आती ? तुम्हें इसका भी कुछ लिहाज नहीं कि अब नीची जमात में नहीं हो; बल्कि आठवीं जमात में आ गए हो और मुझसे केवल एक दरजा नीचे हो। आखिर आदमी को कुछ तो अपनी पोजीशन का ख्याल करना चाहिए। एक जमाना था कि लोग आठवाँ दरजा पास करके नायब तहसीलदार हो जाते थे। मैं कितने ही मिडिलचियों को जानाता हूँ, जो आज अव्वल दरजे के डिप्टी मैजिस्ट्रेट या सुपरिटेंडेंट हैं। कितने ही आठवीं जमातवाले हमारे लीडर और समाचारपत्रों के संपादक हैं। बड़े-बड़े विद्वान उनकी मातहती में काम करते हैं। और तुम उसी आठवें दरजे में आकर बाजारी लौंडों के साथ कनकौए के लिए दौड़ रहे हो। मुझे तुम्हारी इस कमअकली पर दुख होता है। तुम जहीन हो, इसमें शक नहीं लेकिन वह जेहन किस काम का, जो हमारे आत्म-गौरव की हत्या कर डाले। तुम अपने दिल में समझते होगे, मैं भाईसाहब से महज एक दरजा नीचे हूँ, और अब उन्हें मुझको कुछ कहने का हक नहीं है; लेकिन यह तुम्हारी गलती है।

तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और चाहे आज तुम मेरी ही जमाअत में आ जाओ- और परीक्षकों का यही हाल है, तो निस्संदेह अगले साल तुम मेरे समकक्ष हो जाओगे और शायद एक साल बाद मुझसे आगे भी निकल जाओ-लेकिन मुझमें और तुममें जो पाँच साल का अंतर है; उसे तुम क्या; खुदा भी नहीं मिटा सकता । मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और हमेशा रहूँगा ! मुझे दुनिया का और जिंदगी का जो तजुरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते, चाहे तुम एम. ए. और डी. लिट्. और डी. फिल. ही क्यों न हो जाओ । समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है । हमारी अम्माँ ने कोई दरजा नहीं पास किया, और दादा भी शायद पाँचवीं-छठी जमात के आगे नहीं गए; लेकिन हम दोनों चाहे सारी दुनिया की विद्या पढ़ लें, अम्माँ और दादा को हमें समझाने और सुधारने का अधिकार हमेशा रहेगा । केवल इसलिए नहीं कि वे हमारे जन्मदाता हैं; बल्कि इसलिए कि उन्हें दुनिया का हमसे ज्यादा तजुरबा है और रहेगा । अमेरिका में किस तरह राज -व्यवस्था है, और आँठवें हेनरी ने कितने ब्याह किए और आकाश में कितने नक्षत्र हैं, ये बातें चाहे उन्हें न मालूम हों; लेकनि हजारों ऐसी बातें है, जिनका ज्ञान उन्हें हमसे और तुमसे ज्यादा है । दैव न करे, आज मैं बीमार हो जाऊँ, तो तुम्हारे हाथ -पाँव फूल जाएँगे । दादा को तार देने के सिवा तुम्हें और कुछ न सूझेगा; लेकिन तुम्हारी जगह दादा हों, तो किसी को तार न दें, न घबराएँ, न बदहवास हों । पहले खुद मरज पहचानकर इलाज करेंगे, उसमें सफल न हुए, तो किसी डॉक्टर को बुलाएँगे । बीमारी तो खैर बडी चीज है । हम-तुम तो इतना भी नहीं जानते कि महीने-भर का खर्च महीना-भर कैसे चले । जो कुछ दादा भेजते हैं, उसे हम बीस-बाईस तक खर्च कर डालते है, और फिर पैसे-पैसे को मुहताज हो जाते हैं । नाश्ता बंद हो जाता है, धोबी और नाई से मुँह

चुराने लगते है, लेकिन जितना आज हम और तुम खर्च कर रहे हैं, उसके आधे में दादा ने अपनी उम्र का बड़ा भाग इज्जत और नेकनामी के साथ निभाया है और एक कुटुम्ब का पालन किया है जिसमें सब मिलाकर नौ आदमी थे । अपने हेडमास्टर साहब ही को देखो । एम.ए.हैं कि नहीं; और यहाँ के एम. ए. नहीं, आक्सफोर्ड के । एक हजार रुपए पाए हैं; लेकिन उनके घर का इंतजाम कौन करता है ? उनकी बूढ़ी माँ । हेड़मास्टर साहब की डिग्री यहाँ बेकार हो गई । पहले खुद घर का इंतजाम करते थे । खर्च पूरा न पड़ता था । करजदार रहते थे । जब से उनकी माता जी ने प्रबंध अपने हाथ में ले लिया है, जैसे घर में लक्ष्मी आ गई है । तो भाई जान, यह गरुर दिल से निकाल डालो कि तुम मेरे समीप आ गये हो और अब स्वतंत्र हो । मेरे देखते तुम बेराह न चलने पाओगे । अगर तुम यों न मानोगे तो मैं (थप्पड़ दिखाकर) इसका प्रयोग भी कर सकता हूँ । मैं जानता हूँ, तुम्हें मेरी बातें जहर लग रही हैं ।

मैं उनकी इस नई युक्ति से नत-मस्तक हो गया । मुझे आज सचमुच अपनी लघुता का अनुभव हुआ और भाई साहब के प्रति मेरे मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई । मैंने सजल आँखों से कहा- हरगिज नहीं । आप जो कुछ फरमा रहे हैं, वह बिलकुल सच है और आपको उसके कहने का अधिकार है ।

भाई साहब ने मुझे गले से लगा लिया और बोले- मैं कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता । मेरा भी जी ललचता है; लेकिन करूँ क्या, खुद बेराह चलूँ, तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ ? यह कर्त्तव्य भी तो मेरे सिर है !

संयोग से उसी वक्त एक कटा हुआ कनकौआ हमारे ऊपर से गुजरा । उसकी डोर लटक रही थी । लड़कों का एक गोल पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था। भाई साहब लंबे हैं ही । उछलकर उसकी डोर-पकड़ ली और बेतहाशा होस्टल की तरफ दौड़े । मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था !

शब्दार्थ

तालीम	-	शिक्षा;
पुख्ता	-	पक्का;
पाएदार	-	स्तम्भ;
निगरानी	-	देखरेख;
अध्ययनशील	-	पढ़ने लिखनेवाला;
रौद्ररूप	-	क्रोधी चेहरा;
प्राण सूख जाना	-	बहुत डर जाना;
कसूर	-	दोष;
आलीशान	-	भव्य, महान;
बुनियाद	-	नींव;
हुक्म	-	आदेश;
तम्बीह	-	शिक्षा, चेतावनी;
मसलन	-	उदाहरणार्थ, जैसे;
हाशिया	-	किनारा;
दरअसल	-	सचमुच;
इलाज	-	चिकित्सा;
लताड़	-	डाँट;
मेहनत	-	परिश्रम;
फजीहत	-	बेइज्जती, अपमान;
नसीहत	-	सीख;

टेर - दृष्टि, निगाह;

घुड़की - डाँट, फटकार;

सालाना - वार्षिक;

खुराफात - शैतानी;

इम्तहान - परीक्षा;

जुबान - जीभ;

हेकड़ी - अक्खड़पन;

जाहिर - साफ, खुला;

घमंड - गर्व, अहंकार;

नतीजा - फल, परिणाम;

जमाअत - श्रेणी, कक्षा;

जहीन - बुद्धिमान;

जेहन - बुद्धि, मगज;

महज - केवल, सिर्फ;

बदहवास - हतबुद्धि;

नेकनामी - कीर्त्ति, यश;

इंतजाम - बन्दोवस्त, व्यवस्था;

बेतहासा - लगातर, निरन्तर;

शक - संदेह;

तजुरबा - अनुभव, जानकारी ।

अनुशीलनी

१. समझो और लिखो :

(क) लेखक का मन क्यों पढ़ाई में नहीं लगता था ?

(ख) बड़े भाई साहब हर साल क्यों फेल हो जाते थे ?

(ग) छोटे भाई को किन-किन चीजों का शौक था ?

(घ) कक्षा में प्रथम आने पर लेखक क्या सोचते हैं ?

(ङ) बड़े भाई से डाँट खाने पर छोटे भाई के मन में कैसी प्रतिक्रिया होती थी ?

(च) दोनों भाइयों में बडा स्नेह था, यह कैसे पता चलता है ?

२. यह किसने, किससे और कब कहा ?

(क) मेरे दरजे में आओगे तो दाँतों पसीना आएगा ।

(ख) दरजे में अव्वल आ गए, तो तुम्हें दिमाग हो गया है ।

(ग) ''हरगिज नहीं, आप जो कुछ फरमा रहे हैं, वह बिल्कुल सच है ।''

३. भाषाबोध :

निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखो :

तालीम ....

पुख्ता ....

मेहनत ....

खुराफात ....

मसलन ....

जमात ....

बुनियाद ....

निगरानी ....

इम्तहान ....

४. **निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखो :**

फजिहत, नेकनामि, नतिजा, जाहीर, इम्तीहान, जूबान, आलिशान, बूनियाद

५. **पाठ में युग्म-शब्दों को छाँटकर लिखो :**

जैसे : कभी-कभी, खेल-कूद

....

....

....

....

क्या तुम ऐसे अन्य-शब्द बना सकते हो ?

६. **निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन रूप लिखो :**

आँख -

घंटा -

बात -

हल्का -

समस्या -

७. **निम्नलिखित शब्दों को लगाकर वाक्य बनाओ :**

निपुण -

आराम -

आजकल -

अभिप्राय -

आसान -

सफल -

❖ ❖ ❖

सन्धि : यब दो शब्द एक-दूसरे के निकट आते हैं, तब पहले शब्द की अन्तिम ध्वनि और दूसरे शब्द की प्रथम ध्वनि मिल जाती हैं । इस प्रकार मिलने से जो विकार या परिवर्त्तन होता है, उसे सन्धि कहते हैं ।

हिन्दी में तीन प्रकार की सन्धियों का प्रयोग होता है -

(क) स्वर सन्धि

(ख) व्यंजन सन्धि

(ग) विसर्ग सन्धि

इनके बारे में व्याकरण की पुस्तक से जानकारी प्राप्त करो ।

चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए

(संकलित)

पात्र : सेठजी, सेठानी, मुनीमजी

सेठजी : (आवाज देते हैं) मुनीमजी, ओ मुनीमजी !

मुनीम : क्या बात है, सेठजी, सुबह-सुबह क्या आफत आ गई ?

सेठजी : अभी आई कहाँ है, उसी को तो बुला रहा हूँ ।

मुनीम : यानी कि, मैं आफत हूँ ?

सेठजी : अरे तुम न सही, तुम्हारा हिसाब तो आफत है ।

मुनीम : वह कैसे, सेठजी ?

सेठजी : (झुँझलाकर) कल के हिसाब में दो पैसों का घाटा निकल रहा है । उसको निकालने के लिए कल आधी रात तक मैं लालटेन जलाए बैठा रहा, पर घाटा....

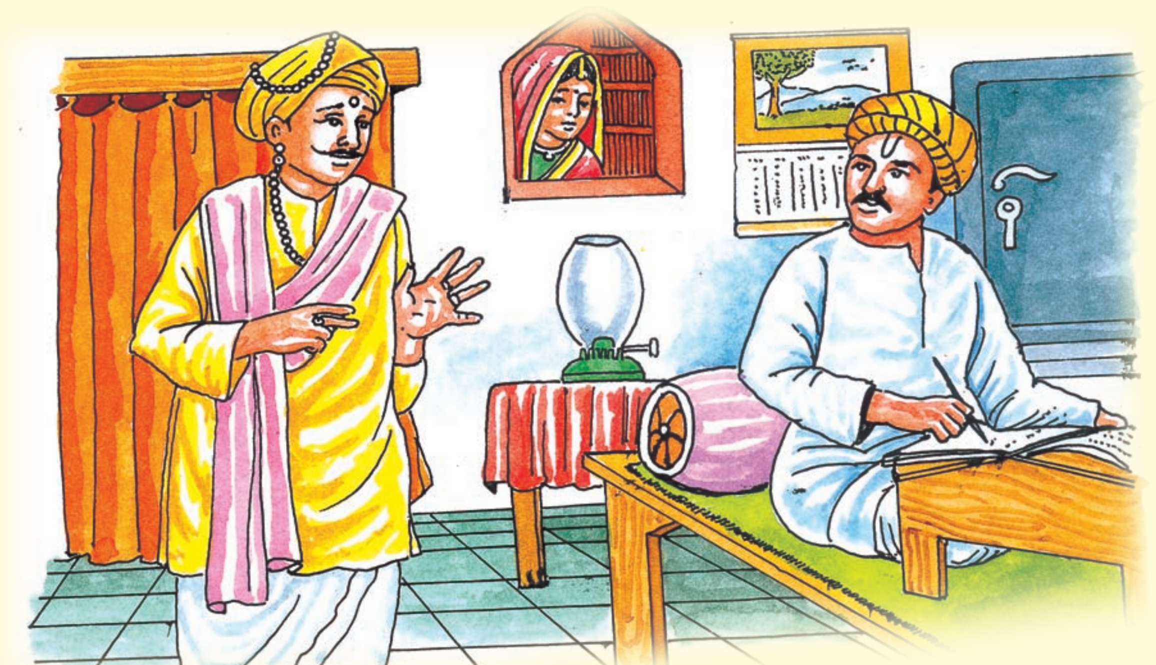

मुनीम : (बात काटकर) सेठजी, गजब हो गया ।

सेठजी : (उछलकर) क्या बात है, मुनीम जी, क्या बात है ?

मुनीम : सेठजी, घाटा तो अब आठ पैसों का हो गया। आधी रात तक छः पैसों का तेल जल गया और दो पैसों का घाटा तो था ही ।

सेठजी : धत् तेरे की, भाग्य में घाटा ही घाटा लिखा है । अच्छा, पहले उन दो पैसों के घाटे को तो निकालो ।

मुनीम : वही फरक ठीक करते-करते तो दिमाग खराब हो गया, अभी फिर जुटता हूँ । (मुनीम थोड़ी देर तक हिसाब जोड़ते हैं ।)

सेठजी : मालूम हो गई तुम्हारी योग्यता, लाओ, बहीखाता इधर दो ।
(सेठजी बहीखाता लेकर हिसाब जोड़ते हैं)

मुनीम : जमा देख जाइए ।

सेठजी : सारा देख लिया, लेकिन हिसाब नहीं मिल रहा । (पेट पकड़कर जोर से चिल्लाता है ।) मुनीमजी, मरा ! डॉक्टर बुला लाओ जल्दी... ।)

मुनीम : सोडा पी लीजिए । पेट ठीक हो जाएगा। एक रुपए की एक आएगी ।
जल्दी से एक-सोडा की बोतल लाता हूँ ।
(लाकर देता है । सेठजी दो घूंट पीकर)

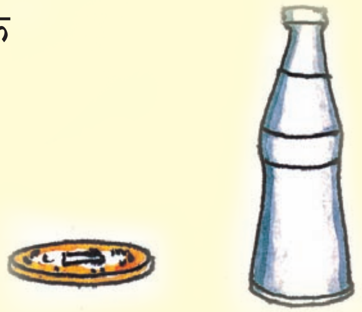

सेठजी : लो मुनीमजी, आधा सोडा वापस कर दो । यह भी कोई पीने की चीज है !

मुनीम : खुली बोतल वापस नहीं हो सकती ।

सेठजी : क्यों नहीं होगी ? यह भी कोई मजाक है ?

मुनीम : पीना नहीं है, तो फेंक दीजिए ।

सेठजी : फेंक दूँ ? खूब कहा । जब पैसा दिया है, तो फेंक क्यों दूँ ? लो, ले जाकर भीतर रख लो ।

मुनीम : बोतल वापस करनी है । बोतल के दाम नहीं दिये हैं ।

(बोतल लेकर चला जाता है)

सेठजी : (फिर जोर से चिल्लाता हैं) अरे, मरा, मुनीमजी !

मुनीम : डॉक्टर को बुलाऊँ, सेठजी ! बीस रुपए लग जाएँगे ।

सेठजी : अरे, न, न, न, न इतना महँगा सौदा नहीं खरीदना । डॉक्टर को न बुलाना । इससे अच्छा तो यही है कि मुझे मर जाने दो । परन्तु पहले यह बताओ कि मरने में कितना खर्च होगा ?

मुनीम : मरने में इससे अधिक खर्च होगा । कोई पाँच किलो तो देशी घी लगेगा।

सेठजी : अरे वाह, जीवन भर तो डालडा खाया और चिता फूँकी जाएगी देशी घी से ! सूखी लकड़ी लेना और फूँक मारकर जला देना ।

मुनीम : कोई दस क्विंटल लकड़ी लगेगी ।

सेठजी : वाह रे मुनीमजी, दस क्विंटल की बजाय दो ही क्विंटल में जला देना । अब मैं मरूँगा । सेठानी को बुलाओ ।

(मुनीमजी सेठानी को बुला लाते हैं ।)

सेठानी : क्या बात है, सेठजी ?

सेठजी : सेठानी, अब मैं मरना चाहता हूँ ।

सेठानी : ऐसा न कहें सेठजी, मरें आपके दुश्मन ।

सेठजी : मेरे पेट में बहुत जोर का दर्द हो रहा है । यदि डॉक्टर को बुलाता हूँ, तो खर्च ज्यादा पड़ता है । इसलिए मरने में जीने से ज्यादा फायदा है ।

सेठानी : मैं अपने जेवर बेचकर डॉक्टर को बुलाऊँगी ।

सेठजी : अरे नहीं, जेवर कभी मत बेचना । समय कम है, जीने में तो घाटा ही घाटा है । मुझे ज्यादा देर मत जिन्दा रखकर मेरा घाटा न बढ़ाओ ।

सेठानी : यह आप क्या कह रहे हैं..... ?

सेठजी : (बात काटकर) देखो जिद न करो, मुझे मरने दो । हाँ, एक काम करना । इस मुनीम के बच्चे को चाभी कभी मत देना, वरना यह घर फूँककर तमाशा देखेगा । सारा खर्च अपने हाथों करना । अच्छा, अब मैं चला ।

(सेठजी चुपचाप लेट जाते हैं, सेठानी सिसकती है ।)

मुनीम : सेठानी जी, अब रोने-धाने से क्या होता है ? सेठजी तो मर ही गये । अब जल्दी इनके फूँकने-फाँकने का प्रबन्ध होना चाहिए ।

सेठानी : मैं कुछ नहीं जानती, मुनीमजी । मुझे क्या पता, क्या होता है, क्या नहीं। कितना खर्च होगा ।

मुनीम : यही कोई पचास रुपए ।

सेठानी : लो यह चाभी । पचास रुपए तिजोरी में से निकालो और सेठजी को फूँकने का प्रबंध करो ।

(मुनीम जी चाभी लेते हैं । सेठजी तेजी से उठते हैं ।)

सेठजी : धत् तेरी सेठानी की । मैंने क्या कहा था कि चाभी मुनीम को मत देना । वरना वह ज्यादा खर्च कर देगा । जब मरने पर भी पचास रुपए खर्च होंगे, तब तो मैं जिंदा रहूँगा । जिंदा रहने में ही फायदा है ।

(पर्दा गिरता है ।)

शब्दार्थ :

आफत	-	मुसीबत;
गज़ब	-	संकट, विपत्ति;
फरक	-	अन्तर, फासला;
जुटना	-	लगना;
योग्यता	-	शक्ति, सामर्थ्य;
फ़ायदा	-	लाभ;
खर्च	-	व्यय;
सिसकना	-	धीरे-धीरे रोना;
चाभी	-	चाबी, कुंजी;
घाटा	-	नुकसान;
भाग्य	-	किस्मत;
दिमाग	-	मस्तिष्क ;
जिंदा	-	जीवित;
मज़ाक	-	हँसी;
दुश्मन	-	शत्रु;
बरना	-	नहीं तो;
ज्यादा	-	अधिक;
जेवर	-	आभूषण, गहने ।

अनुशीलनी

१. सोचो और लिखो :

(i) सेठ जी ने आफत किसे कहा है ?

(ii) मुनीम जी ने सेठ जी को कुल कितने का घाटा बताया ?

(iii) सेठ जी आधी रात तक क्या करते रहे ?

(iv) मुनीम जी ने सेठजी को पेट ठीक होने का क्या उपाय बताया ?

(v) मुनीम जी के डॉक्टर बुलाने की बात कहने पर सेठजी ने क्या कहा ?

(vi) मरने से पाँच किलो घी खर्च होने की बात कहने पर सेठजी ने क्या तर्क दिया ?

(vii) सेठ जी ने जीने की अपेक्षा मरने में फ़ायदा क्यों बताया ?

(viii) सेठ जी ने मरते समय मुनीम को चाभी न देने के लिए क्यों कहा ?

(ix) सेठ जी जिंदा रहने के लिए क्यों चाहा ?

२. यह बात किसने किससे कही ?

(i) मालूम हो गई तुम्हारी योग्यता, लाओ, बही खाता इधर दो ।

(ii) एक रुपये की एक बोतल आएगी ।

(iii) खुली बोतल वापस नहीं हो सकती ।

(iv) ऐसा न कहें सेठजी, मरें आपके दुश्मन ।

(v) लो यह चाभी । पचास रुपये तिजोरी से निकालो और सेठजी को फूँकने का प्रबंध करो ?

भाषाबोध :

३. मात्रा एवं शब्द ज्ञान :

सिसकना, मज़ाक, दुश्मन, दिमाग, भाग्य

इन शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करो ।

४. निम्नलिखित वाक्यों में से संज्ञा-शब्द छाँटकर लिखो ।

(i) इस मुनीम के बच्चे को चाभी मत देना ।

(ii) सेठजी, घाटा तो अब आठ पैसों का हो गया ।

५. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया शब्द छाँटकर लिखो ।

(i) सोडा पी लीजिए, पेट ठीक हो जाएगा ।

(ii) एक रुपये की एक बोतल आएगी ।

(iii) दो पैसों का हिसाब निकल रहा है ।

(iv) जिंदा रहने में ही फायदा है ।

(v) घाटा तो अब आठ पैसों का हो गया ।

६. निम्नलिखित शब्दों के विपरीत शब्द लिखो ।

बेचना = खरीदना

मारना = ...

घाटा = ...

अच्छा = ...

महँगी = ...

ठीक = ...

७. **निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखो और वाक्य में प्रयोग करो।**

जल्दि, मुनिम, फुँक, महँगि, दीमाग़

८. **इस एकांकी का कक्षा में या विद्यालय में मंचन करो ।**